



# कागज़ की नाव

१० धीरेन्द्र वर्मा पुस्तक-संग्रह

लेखक :

श्री प्रताप चन्द्र आजाद

एम०ए०, एल०एल०बी०, एडवोकेट

प्रकाशक :

सेवा सदन प्रकाशन

लखनऊ ।

मुद्रक-स्वराज्य पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, बरेली ।

स० १९७० ई०

मूल्य

# प्रकाशक का दृष्टिकोण

आजाद माह्व की कहानियों का यह सत्रह 'नागज की नाव' का शीर्षक से प्रथमवार पाकेट बुक की प्रकार प्रकाशित हो रहा है। इसमें पूर्व उनकी कहानियों के छे सत्रह भोटी जिल्द बन्ट पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हुये है। निमन्वेह आजाद माह्व की कहानियों ने नमाज में एक उच्चत पृथल सचादी है आर हमीलिए कई साहित्यकारों ने उनकी कहानियों को राष्ट्रनिर्माण की एक बड़ी बतारा है। उन्होंने अपनी कहानियों में गरिद, लाचार आर दवे हुये व्यक्तियों के अन्वकारनय जीवन में आरा का चिराय जलाकर वर्तमान सामाजिक आर राजनैतिक घुराडों को जनता के सामने रखा है।

उनकी कहानियों में सग्रह के अनिरिक्त उनके कुछ गेमे महत्वपूर्ण प्रकाशन भी है जिन्होंने भारतीय साहित्य में चार चाद लगा दिये है। जैसे (१) १८५७ की क्रान्ति म्हेलखण्ड (२) दक्षिण भारत की कला सम्भ्रति एव सभ्यता का इतिहास (३) विदर पाणिम्नान [ग्रंथेजी] (४) इन्तखाव इन्कावे बन्त [उर्दू] (५) हम आजाद हुये (६) हमारे गट्ट निर्माता। उनमें में दो पुस्तके जिन्दांन बला आर किलसकये मुद्बत जो आज में लगभग बीस वर्ष पहिले प्रकाशित हो चुकी है अब राजार में उपलब्ध नहीं हैं।

उनके साहित्य एव उनकी कहानियों के सग्रह के सम्बन्ध में कुछ प्रसिद्ध साहित्यकारों, विद्वानों एव समाचार पत्रों के विचार पाठकों के समक्ष रख रहे हैं।

( ३ )

श्री अनन्त शयनम आश्रम, राज्यपाल बिहार

भूतपूर्व अध्यापक लोकमना

बिहार गवर्नर कैम्प, राबो

अगस्त १३ १९६५

मुझे श्री प्रताप चन्द्र आजाद द्वारा लिखित पुस्तक 'दक्षिण भारत की कला, संस्कृति एवं सभ्यता का इतिहास' पढ़ने का अवसर मिला। इस प्रकार की पुस्तकों की आजकल नितान्त आवश्यकता है। ऐसी पुस्तकें नारीय एकता के लिए उपयोगी हैं। उत्तर दक्षिण के लोगों की महानताओं परस्पर मद्भावना के साथ समझने में ही एक दूसरे को निकट ला सकती हैं। एक दूसरे के प्रति प्रतिष्ठा और श्रद्धा, एक दूसरे की महानता को अनुभव करके ही उत्पन्न हो सकती है। उत्तर भारत में बहुत से व्यक्तियों को दक्षिण भारत से जाकर उनकी संस्कृति को समझने का अवसर नहीं मिल पाया है। इसी प्रकार दक्षिण के बहुधा व्यक्तियों को उत्तर की संस्कृति के समझने का अवसर नहीं मिल पाता है। यह स्वप्न है कि समस्त भारत में केवल एक ही संस्कृति कुछ स्थानीय परम्पराओं के साथ प्रचलित है।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक उत्तर और दक्षिण के छोटे मोटे भाषा के भेद भावों को दूर करके समस्त भारत को एक सूत्र में बांधने में सफल होगी और नवीन उम्र में एक दूसरे के प्रति बड़ी में बड़ी मद्भावना उत्पन्न करेगी।

एम० अनन्त शयनम आश्रम

७ विद्यान सभा माग  
लखनऊ ।

२० जुलाई, १९६५

प्रिय आजाद,

आपकी भेजी "दक्षिण भारत की कला, सस्कृति एव सभ्यता का इतिहास" नामक पुस्तक मिली । मुझे कई बार भारत के दक्षिणी खंड में भ्रमण करने का अवसर मिला जहां मैंने प्रत्येक वस्तु को निकट से देखा और जनसमुदाय की विचारधारा और भावनाओं को समझने का प्रयत्न किया ।

चित्रों के बाहुल्य ने पुस्तक को बड़ा आकर्षक बना दिया जिनको देखने से कला का सजीव चित्र आँखों के साथ हृदय को आकर्षित करता है और पढ़ने से जानकारियों का भण्डार खुल जाता है ।

वधाई ।

भवदीय—

**दरवारी लाल शर्मा**

अध्यक्ष विद्यान परिषद

वाइस प्रेसीडेण्ट, डण्डिया नई दिल्ली ।

१७ जुलाई, सन् १९६२

मुकरंभी वन्दा आजाद साहब,

कई हफ्ते हुए आपके अफसानों का मजमुआ (सग्रह) "जमाने की आख" मुझे मिला था । उसके साथ कोई खत नहीं था । इसलिये सही अन्दाजा नहीं कर सका कि आपके नाशिर (प्रकाशक) ने यह किताब मुझे भेजी है । या अजराहे करम आपने मुझे भेजी है । बहरहाल इस ख्याल से कि शायद आपने भेजी है, यह खत आपकी खिदमत में भेज रहा हूँ और बहुत शुक्रगुजार हूँ कि आपने इस तरह याद फरमाया ।

इस किताब के सब अफसाने अभी नहीं पढ़ सका हूँ, और जो पढ़े हैं वह बहुत पसन्द आये । मुझे उम्मीद है कि आप और भी अच्छे-अच्छे अफसाने लिखेंगे ।

मैं फिर एक बार आपका दिली शुक्रिया अदा करता हूँ । मुखलिस—

**जाकिर हुसेन**

No 2860/W

Raj Bhavan  
BHOPAL  
18 July 1965

To,  
Shri P C. AZAD, M. A., LL. B.,  
Adhyaksh, Zila Parishad, Bareilly.

Dear Sir.

I am directed to acknowledge with thanks the receipt for the Publications 'Dakshan Bharat Ki Kala Sanskrit Evam Sabhita Ka Ithas' which you have so kindly sent to the Governor. I am also asked to convey to you the Governor's appreciation of your very interesting and informative book.

Your faithfully.

*C. S. Gadgil*

Private Secretary to the  
Governor, Madhya Pradesh.

---

From,  
MADAN MOHAN, M.L.C.  
Vice Chancellor

Govind Vallabh Pant Block,  
University of Gorakhpur  
Gorakhpur, Sept. 18, 1965

My Dear Pratap.

I am grateful to you for your letter of August 28 and your latest publication. I have gone through it with great interest and congratulate you on your deep study and lucid presentation. I am sure the book will be found very useful for the libraries of Higher Secondary School and Degree Colleges.

With best wishes

Yours sincerely,  
*Madan Mohan*

उपनाम

३. — श्री प्रनाथ चन्द्र आजाद, प्रकाशक — स्वराज्य प्रकाशन  
बरेली, मुद्रक :— ३ नवम्, १७ सरया — २२८ ;

'उपनाम' श्री प्रनाथ चन्द्र आजाद द्वारा सामाजिक गृह-भूमि पर लिखी गई कहानियों का संग्रह है। प्रस्तुत संग्रह को कहानियों में समाज के विविध त्रणों पर प्रकाश डाला गया है। ये कहानियाँ मनुष्य के हृदय और मस्तिष्क दोनों को प्रभावित करती हैं।

'आजाद' हिन्दी साहित्य के लिये कोई नये लेखक नहीं है। उसकी इसमें पूर्व ४ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

इन कहानियों में स्वयन्त्रता प्राप्ति के बाद के जीवन के दर्शन होते हैं। इन कहानियों में वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक दुरावस्थाओं को जनता के सामने रखा गया है जो नए नए प्रेरणा की बी गई है।

'प्रेमनाथ का घर' आज के फीजल परस्ती के युग को पर करारा व्यंग्य है।

प्रस्तुत संग्रह की नए कहानियों में हाल के भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय की सामाजिक स्थिति और वातावरण की झलक है।

नवम्बर १२-१२-६६

हिन्दी-संस्कृत २१ अक्टूबर स० १९६६

उपनाम के लिये लेखक—प्रनाथ चन्द्र आजाद, प्रकाशक—  
स्वराज्य प्रकाशन बरेली, मुद्रक—हिन्दू प्रिन्टर्स इवेली गृह सरया - १०२  
मुद्रक—तीन नवम् ।

यह पुस्तक लेखक की पंद्रह कहानियों का संग्रह है, जिन्होंने उसने भारत-पाक युद्ध की गृह भूमि में विभिन्न मानवीय मनोभावों व समस्याओं पर प्रकाश डाला है। लेखक ने अपने राजनीतिक-सामाजिक कार्यों के अनुभव के आधार पर इन कहानियों में भारतीय सैनिकों के सौर्य पर अक्षुब्ध खासा प्रकाश डाला है तथा विभिन्न सामाजिक कुरीतियों विशेषकर भ्रष्टाचार और पैसा परस्ती के विरुद्ध भी सशक्ति वातावरण निर्माण किया है।

लेखक ने अपनी कहानियों से झोजबाल की भाषा का प्रयोग करके हिन्दी के राष्ट्रीय स्वरूप पर प्रभावकारी ढंग से प्रकाश डाला है। प्रमत्तना इस बात की है कि उनके नायक अमीन नर नारी हैं, जो बड़े बड़े आदर्शों नहीं बरन ईमानदारी निष्ठा व मेहनत की मान्यताओं के लिये कष्ट उठाने हैं तथा जन सम्मान आत्म भरोष व सफलता से पुरस्कृत होते हैं। मौन का बदला जिन्दगी का नायक अमीन (जो कि भारतीय सेना का कप्तान है, गक हमनाबरो को खड़ेडता हुआ म्दालकोट पहुँचकर विभाजन के समय अपने ही खून के प्यासे नसीम को प्राण दान देकर भारतीय सेना के गौरव वालीनता पर प्रकाश डालना है। दूसरी ओर टिकट कलेक्टर से गौरवी लाल बड़े बाबू अपने ही पुत्र व भ्रष्ट टिकट कलेक्टर को दण्डित कराने से सहायता देकर पाठकों की सहानुभूति अर्जित करती है।

### नया दौर, लखनऊ !

“पी० सी० आनंद महेश भाविक एम० एल० सी० उत्तर प्रदेश के मशहूर सियासी और म्माजी कारकुन होने के अलावा उर्दू के शायर, सहाफी (पत्रकार) और अफमाता निगार (कहानी लेखक) हैं। जन्मे तालिब इलमी ही से वह उलसे मखुन (कविता) के भी शेदाई हैं, और नैनाये वतन (देश-भक्ति) के लीदाई। अपनी सिनसी सरगमियों की बिना पर वह कई मरतबा जेष गये। मगर चक्की की सशक्कन के साथ अठवीं दिनचस्पी जारी रही। जेरे मजर किताब उनके अफसानो का मजसुआ है। कुदरतन उनके अफसानों में हुन्नेवतन और ममाजी इम्लाह (मुबार) का जजवा कारफर्मा है, और चूँकि आजाद माहेश खुद जये-आजादी की मार का प्राराइयी (आन्दोलनों) में शरीक रहे हैं इसलिये उनके अफसानो में हुकीबन निगारो (सच्चाई की लम्बीर) मिलती है, और उनके किरदार (पात्रो) जीने जायते किरदार है, जिनसे हमे अपनी जिन्दगी में अक्मर वास्ता निबना है।”

नया दौर



# ।न ○ ○ ○ ○ ○ ★ ○ ○ ○ ○ ○ कहाँ ?

१	बाप की बहू	...	१
२	पागल कुत्ता	...	१७
३	कीमती इन्साफ	...	३२
४.	थाली के बंगन	...	४३
५	समाजवाद की देवी	...	५८
६	चमचे	...	६८
७	कागज की नाव	...	७५



# बाप की बहू

माता पिता के मन्वरे ने थोड़ा बहुत प्रभाव उनकी मन्तान पर प्रबन्ध ही पन्न है, किन्तु प्रदीप के पिता तो इन बात की तनिक भी चिन्ता नहीं थी कि उसकी विदार्ग की हतचको का उसके टकलौते पुत्र प्रदीप पर क्या प्रभाव पड़ेगा। प्रदीप की मा तो प्रदीप को १४ वर्ष का छोडकर ही इस सतार से चलवती थी। इस समय प्रदीप हाई स्कूल में पढता था। प्रदीप की मा का सारा जीवन टुटन और परेवानी में गुजरा करो कि उसका पति दामोदर एक बनी व्यक्ति होने पर भी दृपचरित्र आदमी था। दामोदर की ही को दामोदर की सारी फरतुता का पता था किन्तु वह बेवारी दामोदर ने कुछ कहने का साहस नहीं रखती थी, और न कभी दामोदर अपनी स्त्री की परवाह ही करता था। वह अकसर नाच नमाओ में रात रात भर जावत्र रहता। सुबह तो बजे से पहले मोकर उठना ही जानता ही नहीं था जब दामोदर की स्त्री का देहान्त हो गया तबसे तो वह आर भी अधिक आवाग हो गया। उसे इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं थी कि उसका लडका प्रदीप जोकि जवान होने जा रहा है उस पर उसकी इन गणेरियो का क्या प्रभाव पड़ेगा।

प्रदीप ने हाई स्कूल पास करने के पश्चात् अपना दाखला नगर के एक इन्टर कालिज में ले लिखा। प्रदीप पर अपने बाप के कुछ सस्कारों की छाप जवान होने ही लभने लगी। वह एक स्वस्थ और गौरा चिहुना नोजवान था। उसे अपनी जिक्षा में भी अधिक ध्यान अपनी फेशन और अपने बनाव शृङ्गार की ओर था। उसके घूघर वाले काले बाल, उसकी बडी बडी आंखे, उसका मुडौल जरीर और उसका चाद जमा चेहरा.

उसकी कैमल का और भी अधिक चार चाद लगाये हुये थे। वह अपने कालिज के सुन्दर और फैंकतेबुल लडको में शुमार किया जाता था। किन्तु उसमें एक यह गुरा प्रबन्ध था कि बनाव गृहकार के साथ वह अपनी कक्षा में इतना पह लिख लेता था कि प्रन्थेई वर्ष पास होता रहता था।

प्रदीप की मा के देहान्त को लगभग दस वर्ष हो गये थे। प्रदीप के पिता दामोदर की आयु भी अब लगभग ५५ वर्ष के हो चुकी थी। प्रदीप की आयु भी २४ वर्ष के आस पास थी। प्रदीप अब कालिज में बी०ए० कक्षा में पहुँच चुका था। इसलिये दामोदर के जो रिश्तेदार या भित उसके पास आते, वह दामोदर से प्रदीप के विवाह करने का सुभाव देते थे ताकि दामोदर के घर को सभानते के लिये एक स्त्री प्राजाय। किन्तु दामोदर मर्दव वह कह कर राज देता था कि प्रदीप अभी बच्चा है। वह जब पह लिखकर निवृत्त हो जायगा तभी उसका विवाह रचाना ठीक रहेगा। उधर दामोदर की जो श्रावत जवानी में पहु गई थी उसमें कोई कमी नहीं पाई जाती थी। वह नाच गी, ध्येटर और विनेसा का अब भी उतना ही शौकील था जितना जवानी में। वह अब भी अक्सर रंगरेलियों में रात रात भर घर में गायब रहता, प्रदीप और नौकर चाकर ही सहल जैसे आलीशान मकान को आवाद किये रहते थे। अब तो कभी कभी प्रदीप भी अपनी भित सडनी के साथ विनेसा जाने चला था। इसलिये जिस दिन वह भी रात्री को विनेसा चला जाता तो घर से नौकर चाकर ही चैन की बगी बजाते थे। अक्सर ऐसा भी होना लगा कि दामोदर जब रात्री को देर से घर आना तो वह प्रदीप को घर में नहीं पाता। नौकर चाकरो में पूछने पर उसे ज्ञान होता कि वह विनेसा गया हुआ है। तब दामोदर को कुछ ऐसा आभाव हुआ कि नहीं प्रदीप आबारा न हो जाय इसलिये उसने सोचा कि प्रदीप का विवाह किसी यती लिखी सुन्दर युवती में कर दिया जाय। दामोदर ने अपने इष्ट भितो में भी प्रदीप के विवाह की चर्चा की। दामोदर शहर के धनी आदमियों में से था। फिर प्रदीप भी पढा

निवाह कराने का न जाने कितने बली मार प्रथित व्यक्ति युद्ध फैलाये बैठे थे। कुछ ही दिनों में दामोदर के पांच सुपुत्र दुस्त्रियों के फोटों और उनके मां बाप के पत्रा का नाम लस गया।

एक दिन दामोदर अपने बड़े बड़े कम में बैठा हुआ अपने कुछ मित्रों से बात कर रहा था कि इनमें से पॉन्टमैन ने आवाज दी और एक रजिस्टर्ड लिफाफा जिसमें एक पत्र और एक फोटो था, दामोदर के हाथ में दिया। दामोदर ने लिफाफा खोला तो एक युवती का फोटो और उसकी मां का एक पत्र दामोदर के नाम उन अक्षरों में था।

'आदरणीय दामोदर दाय जी'

'मुझे यह जानकर अफसोस है कि आप अपने सुपुत्र चिरंजीव प्रदीप के विवाह का मकल्प कर रहे हैं। मैं भी अपनी लड़की निर्मला का फोटो आपकी सेवा में भेज रही हूँ। मुझे आशा है कि चिरंजीव प्रदीप को यदि मेरी पुत्री का फोटो पसन्द आजाय तो दोनों की युगल जोड़ी एक आदर्श जोड़ी होगी।

मैं इतना और स्पष्ट कर दूँ कि मैं एक विधवा स्त्री हूँ। मेरे पति अपने पीछे केवल निर्मला को ही सन्तान के रूप में छोड़ गये हैं। मैंने भगवान की कृपा में मेरे पास एक बगला और कई दुकानें गहर के बीच बाजार में हैं जो सब मेरे वाद निर्मला की ही सम्पत्ति होगी। निर्मला की आयु तीस वर्ष की है।

उत्तर की प्रतीक्षा में"

दामोदर ने निर्मला का फोटो देखा तो उसे ऐसा लगा जैसे कि माक्षा कोई मौन्दर्य की मूर्ति विराजमान हो, उसका रोमास जाग उठा। उसके हृदय में एक अजीब शुद्धि पैदा होने लगी। उसने अपने पास बैठे हुये अपने एक मित्र से निर्मला का फोटो दिखाते हुये कहा।

"देखिये, यह लड़की क्या साक्षान्त सुन्दरता की प्रतिभा है?"

‘समझ जाइ सकत । दामोदर दास जी अगए यह तारी आपन घर म बन बनकर आगए ता आपके घर का जगमगा तेगा

‘लेकिन । यह खत तो पढो, डम लडकी की केवल विधवा मा हे आर कोई नहीं । फिर उम्र २० वर्ष की है जबकि प्रदीप अभी २४ वर्ष का भी पूरा नहीं हुआ है ।’

‘हा. तब तो ठीक नहीं ; प्रदीप का विवाह तो भरे पूरे घर मे होना चाहिये जहा प्रदीप की मास, भसुर, साले और मानिया सभी हो ।’

‘बिष्कुकल यही मेरा विचार है, किन्तु यह लडकी उनती सुन्दर है कि मेरा दिन कह रहा है कि इसे भी किसी न किसी प्रकार हमारे घर की शोभा बनत चाहिये ।’

‘तो फिर दामोदर दास जी । प्रदीप मे न मही आप ही अपना विवाह छप्पे कर लीजिये । अभी तो आप पचाम साल के ही है । आजकल तो लोग साठ साठ वर्ष मे जाती कर रहे है ।’

‘मुझे मेरे मुह की बात हीन ली । लेकिन प्रह बताओ जो प्रदीप की शादी के लिये कोटो भेज रही है वह मुझमे विवाह करने को कव नैगर हो जायगी ।’

‘दामोदर दास जी । यह काम आप मुझपर छोडे । मैं उस बुढिया मा मेसे हरे बाय दिखाऊंगा कि आपमे विवाह करने पर अवश्य राजी हो जायगी ।’

‘किन्तु प्रदीप डम उम्र मे मेरी शादी को पसन्द करेगा ?’

‘क्यों नहीं । उमे भी समझाना मेरे बाये हाथ का खेल है ।’

‘उसको आप कैसे समझायेंगे ?’

‘दामोदर दास जी । उनसे तो मैं यह कहूंगा कि वेटा मेरे विवाह मे पहिले मेरी वह का लाइ प्यार करने के लिये इस घर मे मेरी मा की जरूरत है, सर्गी मा न मही तो सोली ही मही ।

‘तो फिर डम शुभ कार्य मे देर क्या ।’

“तो अभी जाता हूँ और भगवान ने साक्षात् तो नाम तक बाजी जीत कर आऊँगा।”

यह कहकर दामोदर का मित्र दामोदर ने एक हजार रुपये के नोट लेकर चला गया। वह सीधा निर्मला की माँ के पास पहुँचा। निर्मला की माँ अपने कमरे में बैठ कर किमी नौकर से बात कर रही थी। बाहर से किमी की आवाज सुनते ही उसने नाकर को भेजा कि वह देखकर आये कि कौन है। नौकर ने वापस आकर बताया कि कोई सज्जन उससे निर्मला के विवाह के सम्बन्ध में कुछ पूछते आये हैं। निर्मला की माँ ने नाकर से कहकर उन्हें घर के भीतर ही डाइंग रूम में बुला लिया। दामोदर दाम के मित्र ने आते ही निर्मला की माँ से कहना आरम्भ किया।

“सादर आप ही निर्मला की माँ हैं।”

“जी हाँ”

“आपने नाई पत्र और निर्मला का फोटो दामोदर दाम जी के पास भेजा था।”

“जी हाँ। तो क्या आप दामोदर दाम के यहाँ से आये हैं।”

“जी हाँ मैं दामोदर दाम का एक प्रतिष्ठित मित्र हूँ। आपको कुछ शकत कहूँ तो गई इन्फ्लुएन्जा से नवयुवकी सेवा से उपस्थित हुआ हूँ।”

“वह क्या?”

“वह यह कि दामोदर दाम का लड़का तो अभी बच्चा है। दामोदर दाम उसके पालन पोषण और लाइवियर के कारण नवयुवकी शादी करना चाहते हैं।”

“अच्छा यह बात है, दामोदर दाम की उम्र कितनी होगी?” निर्मला की माँ ने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

“यही ३५ और ४० के बीच में। फिर आप जानती हैं वनी मानी व्यक्ति है और नन्दकुमारी भी भगवान ने ऐसी कमाल की दी है कि लान सख्त पड गये है।”

‘लेकिन भी निर्मला की उम्र तो बीस ल की ही है

‘तो फिर विल्कुल ठीक जोडा बनेगा ३५ के दामोदर दास और २० साल की निर्मला । घर क्या स्वर्ग बन जायगा !’

‘लेकिन मैंने तो प्रदीप के विवाह के लिये निर्मला का फोटो भेजा था न कि दामोदर दास के लिये ।’

‘ओह हो ! आप मेरी बात समझ नहीं रही हैं । प्रदीप तो अभी बच्चा है । १५ या १६ वर्ष का उसके तो विवाह का तो प्रश्न ही नहीं उठता । निर्मला की जोड़ी तो दामोदर दास से ही ठीक रहेगी ।’

‘इसके लिये मुझे समय की आवश्यकता है ।’

‘यह आपकी बात ठीक है । शादी विवाह कोई गुडिया गुड्डो का खेल तो नहीं है । आप दामोदर दास के सम्बन्ध में पूरी जानकारी करले तब विवाह की बात करें । किन्तु इसके लिये मुझे समय निर्धारित करदे । क्योंकि जब मे शहर में यह गोरखत हुई है कि दामोदर जी विवाह करेगे गेज दसों फोटो और पत्र एव मन्देशो का ताता लगा रहता है ।’

‘क्यों नहीं लगगा । आखिर दामोदर दास अपने शहर के धनी और पढे लिखे व्यक्ति है ।’

‘इसीलिये तो मैं समय निर्धारित करा रहा हूँ ।’

‘मैं एक सप्ताह में आपको फाइनाल उत्तर दे दूंगी ।’

‘बहुत अच्छा ।’

यह कहकर दामोदर दास का दलाल मित्र वहा से चला आया और दूसरे ही दिन रेल में बैठकर दामोदर दास के पास पहुँच गया । उसने अपने और निर्मला की मा के बीच हुई सारी बातों को दामोदर दास को बिबरण सहित सुना दिया । उसने यह भी बताया कि बुढिया ने सात दिन का समय अन्तिम निर्णय हेतु दिया है । दामोदर दास को अपने मित्र की बातें सुनकर ऐसा लगा जैसे कि जवाती उसके शरीर में पुनः प्रवेश कर रही है । उसके हृदय

मे एक अजीब प्रकार की शुद्धगुनी उठने लगी। मान दिन किन बेचैनी और विवशता में व्यतीत होगे। उमे बार बार यही विचार परेशान कर रहा था। उसने अपने मित्र से परामर्श किया कि बुढिया का निर्णय किम प्रकार उसके पक्ष में हो डमकी भी योजना बनानी चाहिये। अखिर उसका मित्र तो हर्फतसौना था ही, कुछ देर मोचकर उमने कुटकी वजाकर दामोदर दाम का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने हुये कहा।

“मुनिये दामोदर दाम जी। मेरी समझ में एक तिकडम आ गई।”

“अरे भाई तुम तो तिकडमो के ही वादशाह हो किम क्यों न तुमने कोई तिकडम की अच्छी योजना बनाई होगी।”

“बहुत अच्छी योजना है।”

“क्या हे बनाइये भी तो।”

“मुनो भाई दामोदर दाम जी। इस नगर में कुण्टो नाम की एक कुटनी रहती है। वह बड़े बड़े लोगो को अपने जाल में फाम चुकी है।”

“लेकिन वह तो अपने लिये लोगो को फामती होंगी न कि दूसरों के लिये।”

“नही लाला दामोदर दाम। कुण्टो का यही तो कमाल है कि उसको मुँह मागा पैसा दीजिये और बडे से बडा काम अपने लिये करा लीजिये।”

“मैं तुम्हारा मतलब नही समझा। वह कुटनी हमारी क्या सहायता कर सकती है।”

“दामोदर दाम जी। प्रही तो समझने की बात है।”

“समझाइये।”

“वह यह, कि मैं उस कुटनी को कहूँगा कि वह सजधज कर बुढिया के पास जाय, और अपने आपको बडे साहूकार की स्वी जाहिर करे, और बुढिया से यह कहे कि वह अपनी लडकी का विवाह दामोदर दाम से करना चाहती है क्योंकि दामोदर दाम एक बहुत बड़ा आदमी है। साथ ही वह यह भी कहे कि उसने सुना है कि निर्मला के विवाह की बात भी दामोदर दाम से चल रही है,



इसलिये वह बुढ़िया पर यह जोर दे कि वह निर्मला के विवाह की बात दामोदर दाम ने समाप्त कर दे और उसके लिये वह जितना पैसा घूस में बाह उमसे ले ले ।”

“लेकिन, इसने कौन काम बन गा ।”

“बाला दामोदर दाम आप देखे ऐसा बुढ़िया काम बनेगा कि आप भी अचम्भ से पड़ जायेंगे

‘वह क्या ?’

“वह यह कि निर्मला की मा कुण्डो की बातें सुनते ही यह समझ जायगी कि वास्तव में दामोदर दाम बहुत बड़ा आदमी है और शादी करने वाले उसके आगे पीछे माने मारे फिरते हैं । वह तुरन्त निर्मला का विवाह आपसे करने को तैयार हो जायगी ।”

बात खूब मोची, अगले काजशाबी हो जाय तो मैं तुम्हें नोटों के तार पड़ियाऊगा ।”

“दामोदर दाम जी । आप देखें मा फीसदी कामयाबी होगी ।”

“अच्छा तो शुभ काम में देर क्या ।”

‘कुछ नहीं, मैं अभी कुण्डो के पास जाकर उसे निर्मला की मा के नाम भेजना हूँ ।’

यह कहकर दामोदर दाम का नित्र बहा में उठकर सीधा कुण्डो के घर आया । उसने कुण्डो को सब कुछ बताकर निर्मला की मा के पास जाने को कहा । कुण्डो तो रुपये की दूखी थी । उसने इस काम के लिये पाच सौ रुपये की फरमाहश की । दामोदर दाम का मित्त पाच सौ रुपये कुण्डो को देने को तुरन्त तैयार हो गया । उसने दूसरे ही दिन दामोदर दाम से पाच सौ रुपये लेकर कुण्डो को दे दिये । कुण्डो एक बड़ी सुन्दर साडी पहिनकर और सजवज कर उम नगर में पहुँची जहा निर्मला की मा रहनी थी । वह सीधी निर्मला की मा के कमरे में धुमती चली गई । निर्मला की मा को आश्चर्य भी हुआ कि यह कौन सी स्त्री है जो बिना पूछे हुये सीधे उसके पास आकर बैठ गई ।

कुन्टो ने दोनों हाथ जोड़कर निर्मला की माँ को नमस्कार किया। इतने में सामने से निर्मला भी आ गई। अभी निर्मला की माँ कुछ पूछने ही वाली थी कि कुन्टो ने उसे कुछ कहने का अवसर न देकर स्वयं ही कहना आरम्भ कर दिया।

“निर्मला की माँ ! आपको पहिली बार मुझे अपने कमरे में देखकर अचम्भा हुआ होगा”

“हाँ, माफ़ कीजिए, मैं आपको पहिचान नहीं सकी”

“आप ठीक ही नहीं पहिचान सकी क्योंकि इसमें पहिले कभी मेरी और आपकी कहीं भेट नहीं हुई”

“अच्छा तो आज आपने कैसे कष्ट किया”

“निर्मला की माँ ! मैंने कष्ट किया नहीं बल्कि आपको कष्ट दिया।”

“कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ”

“निर्मला की माँ ! मैं भी तुम्हारी ही तरह एक विधवा स्त्री हूँ। और मेरे भी केवल एक ही लड़की है। घन दौलत की मेरे पास भी कोई कमी नहीं, बगला और मोटर के अलावा मेरे पति कई लाख रुपये की सम्पत्ति छोड़कर गये हैं।”

“तो फिर आपको क्या चिन्ता है”

“निर्मला की माँ सबसे बड़ी चिन्ता मुझे यह है कि मैं अपनी लड़की के हाथ पीले करके किसी अच्छे और योग्य व्यक्ति के साथ शादी करदूँ।”

“इस शुभ कार्य में आप मुझसे क्या सहायता चाहती हैं”

“निर्मला की माँ ! मैंने अपनी लड़की के विवाह के लिये एक नौजवान दामोदर दाम को ढूँढा था हालांकि उसकी पहिली स्त्री का देहान्त हो चुका है किन्तु फिर भी वह स्वस्थ, योग्य और एक धनी

परिवार में मेरे जेठे अग्रज भाई के साथ प्रेम से रहना चाहता हूँ।

“हां, उस सम्बन्ध में कुछ बातें तो अवश्य रखी हैं, किन्तु अभी मैंने कोई आधिकारी फैसला नहीं किया है।”

“निर्मला जी मां ! मैं यहाँ से अभी तो विदेशन करने आई हूँ कि यदि आप दासोदर से निर्मला का विवाह करना चाहती हैं तो मैं प्रायः दोनों के बीच से नहीं जाना चाहती, किन्तु अगले आपने कोई और लड़का चुने लिया हो तो मुझे क्या कीजिये ताकि मैं कुलदासोदर से अपनी लड़की का विवाह कर सकूँ। क्या फिर मुझे दासोदर से लड़का जो बजारों में एक है, खरी लेना है ?”

निर्मला की माँ का गिरावट कुछ मोचनी नहीं। उसने निर्मला की ओर देखा और कुलदासोदर का नाम बगनी घोर आर्पित करके चुन्कराने लगे कहे।

“बहिन जी, कुलदासोदर बजारों में एक है तो मैं कैसे उसे छोड़ सकती हूँ। मैं दासोदर के भिन्न को एक मनाह के भीतर उत्तर देने को कहा था। मैं बस ही उसे संदेश देती हूँ कि मैं निर्मला की शादी दासोदर से करने को तैयार हूँ।”

“अच्छा निर्मला जी मां ! तो मेरी तरफ से भी आप बचाई स्वीकार कीजिये कि आपको ऐसा लड़का मिल गया कि निर्मला जीवन भर मानी बनकर रहेगी।”

“आपका बन्धुवाद”

“अच्छा तो अब मुझे राजा दीजिये”

‘यह कैसे हो सकता है, आप इतनी दूर से आरहो हैं न आपने साथ ही न खाना खाया। मैं आपकी बिना खाना खिलावे नहीं जाने दूंगी।’

तापता भी यों मरु घर पर प्रस्तुत न दा पट्टन है। वहा लड़का का नकेवा नकार तारको के पास डा हाथ आई ई। इसनिये इप समय मुझे आरा दे दीजिये।”

यह कहकर कुन्टो वहा से चले आटे और वह अपने नगर में पहुँच कर सीधी दामोदर काम के उनी मित्र के मकान पर पहुँची जिनने यह काम उसके सुपुर्दे किया था। उसने जाने ही यह शुभ समाचार दामोदर के मित्र को सुना दिया। दामोदर का मित्र कुन्टो को लेकर खुशी खुशी सीधा दामोदर के मकान पर पहुँचा और उसने दामोदर को कुन्टो द्वारा उसकी योजना की सफलता का वृष मन्देश दिया। दामोदर खुशी से उछल पड़ा। उसने तुरन्त सन्दूक खोलकर नकद पाँच सौ रुपये निकाल कर इनका के रूप में और कुन्टो को दिये। कुन्टो यह रुपये लेकर खुशी से उछलती बूझती अपने घर चली गई। इन्हने ही दिन निर्मला की माँ ने अपने किसी मित्रेदार को भेजकर निर्मला की शादी दामोदर से करने का स्वीकृति पत्र दिया।

दामोदर और निर्मला की शादी निश्चित हो गई। शादी वाले दिन दामोदर ने बहिया से बहिया मित्राद मन्कर अपने सफेद बानो को काला किया। उसके दात भी पत्थर के बने हुये लगे थे। उसने केन्दल सर्जन की दुकान पर जाकर एक बहुत सुन्दर और सधेद दाँतो की बल्लीसी बई सौ रुपये ने खरीदकर अपने पुराने दाँतों को बदलवा कर लगवाई। उसने अपने चेहरे को पाउडर से ऐसा रत्ना लिया जैसे कि वह २५ वर्ष का बवाल हो। उसने अपने मित्र को यह भी कह दिया कि वह प्रदीप को यह समझादे कि विवाह के समय उनका घर पर रहना ठीक नहीं। वह कुछ दिनों को अपने मित्र मित्र के वहा चला जाय। प्रदीप स्वयं भी समझ गया कि दामोदर का ऐसा कहलाने का क्या तात्पर्य है, अतः वह दामोदर के विवाह के समय अपने किसी मित्र के घर चला गया।

दामोदर और निर्मला का विवाह हो गया। निर्मला दामोदर के घर डूल्हन बनकर आ गई। कुछ दिनों तक तो वह भी दामोदर की उम्र का अन्दाजा नहीं लगा सकी किन्तु आखिर यह सब कैसे छुप सकता था। शादी के पश्चात् निर्मला जब पुनः दामोदर के घर आई तो उसे पता लग गया कि दामोदर के एक जवान लडका भी है। वह यह भी समझ गई कि दामोदर ने विवाह के समय खिजाब लगाकर अपने बालों को काला कर रखा था। शनैः शनैः उसे यह भी पता चल गया कि दामोदर के दात पत्थर के मसनुई बने हुये हैं। किन्तु वह कर ही क्या सकता थी, इमलिये कि उसका विवाह तो सदैव के लिये दामोदर के साथ हो चुका था। उधर कुछ ही दिनों बाद प्रदीप भी घर पर आ गया। प्रदीप का स्वस्थ और मुडौल शरीर, बड़ी बड़ी आंखें, काले घूँघर वाले बाल और मोरा चिट्ठा रंग देखकर निर्मला को ऐसा लगा कि यदि उसका विवाह दामोदर के बजाय उसके बेटे प्रदीप से हुआ होता तो दोनों का जीवन कितना सुखी और आनन्दमय होता। उधर प्रदीप ने भी पहिली बार जब निर्मला को देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। प्रदीप तो यह समझता था कि उसके पिता ने किसी अंधेड़ स्त्री से शादी की होगी। किन्तु निर्मला तो बीस वर्ष की एक सुन्दर लडकी थी, जिसे देखकर ऐसा लगता था जैसे कि मौन्दर्य की माक्षात मूर्ति उसके घर में आ गई हो। प्रदीप को यह शादी पसन्द नहीं थी। वह दिल ही दिल में कुढ़ता था और अपने बाप को एक नौजवान और सुन्दर युवती के अर्मानों की हत्या का अभियोगी ठहराता था, किन्तु विवश था। वह कर ही क्या सकता था। इस प्रकार निर्मला और दामोदर के विवाह को लगभग चार वर्ष व्यतीत हो गये। इस बीच में दामोदर निर्मला को पाकर इतना मस्त हो गया कि वह यह भूल गया कि उसे अपने जवान लडके प्रदीप का विवाह भी करना है। अक्सर उसके नाते रिश्तेदार उसका ध्यान प्रदीप की शादी की ओर दिलाने तो दामोदर यह कहकर टाल देता था।

“प्रदीप अब स्वयं जवान है, वह अपनी मर्जी से अपने लिये कोई लड़की ढूँढ ले। मुझे उममें कोई आपत्ति नहीं होगी।”

प्रदीप भी समझ गया कि उसका बाप निर्मला के साथ रगरेलियों में इतना मस्त है कि उसे उसके विवाह की कोई चिन्ता नहीं। प्रदीप भी नहीं चाहता था कि उसका विवाह जल्द ही जाय। उसका कारण यह था कि वह अपने नगर में कई सुन्दर युवतियों को अपने जाल में फास चुका था। हर एक से वह शादी करने का वचन देता किन्तु शादी के बाद उसकी आजादी समाप्त हो जायगी और वह एक ही स्त्री से बचकर रह जायगा, उस बात को सोचकर वह मदैव टाल मटोल करता रहता था।

प्रदीप रात्रि को मदैव देर में लोटता था। कभी कभी तो रात्रि के बाहर वज्र जाते थे। डमलिये सुबह को अक्सर वह देर तक सोता रहता था। एक दिन सुबह आठ बजे गये और प्रदीप सोना ही रहा। अक्सरमात बाहर से उसके किमी मित्र ने आवाज दी। घर में उस समय तो कोई नाकर ही था, और दामोदर भी किसी काम में बाहर चला गया था। निर्मला कुर्मी पर बैठी बरामदे में चाय पी रही थी। उमने देखा घर में कोई नौकर नहीं है, तो वह स्वयं ही प्रदीप के कमरे में उसे जगाने के लिये चली गई। प्रदीप गहरी नींद में सो रहा था। निर्मला ने प्रदीप को घूर घूर कर देखा। उसको फिर इसी विचार में बेचैन कर दिया कि उसका जीवन कितना आनन्ददायक होना यदि उसकी शादी प्रदीप में होनी। वह इसी विचार में अपने को खोया हुआ सा पाने लगी। उसे यह भी खबर नहीं रही कि बाहर प्रदीप को कोई आवाज दे रहा है। उसका दिल बेकाबू हो उठा। वह इसी दशा में प्रदीप की चारपाई पर प्रदीप के गले में अपनी बाहे डालकर बैठ गई। प्रदीप निर्मला के चारपाई पर बैठते ही जाग पड़ा उसने देखा कि निर्मला उमके गले में बाहेँ डाले बैठी है। उसका सुन्दर चेहरा और कोमल हाथों को देखकर उसे ऐसा लगा जैसे उमके समस्त शरीर में कोई बिजली की करेण्ट दौड़ रही हो। पहिले तो वह कुछ समझ

वही । फिर उसने यह सोचा थायव निर्मला उसे मा का प्यार देने आई हो । इसलिये उसने निर्मला की ओर देखकर कहा ।

“माँ क्या बात है”

‘तुम मुझे माँ मत कहो’

‘क्यों’

“इसलिये कि तुम्हारे पाप ने अपनी काम वासनाया को तुम्हारे धर्म लिये बुझाने में मुझसे विवाह रचाया है । विवाह तो भेग तुम्हारे नाश होना चाहिये था ।’

“किन्तु अब ऐसा सोचना भी आपके लिये पाप है”

“प्रदीप ! तुम एक अपट्टेड नौजवान होकर ऐसी बात कर रहे हो । एक बड़ा जवान लड़की से शादी करे यह पाप है या एक जवान लड़की जवान लड़के से प्यार करे यह पाप है ।”

“आपका मतत्व”

“प्रदीप ! भेग मतलब यह है कि मैं तुमसे प्यार करती हूँ”

“लेकिन, पिता जी से आपकी शादी हो चुकी है । यह कैसे सम्भव होसकता है कि आप मुझसे प्यार करें, समाज रूप दोनों को क्या कहेगा”

“प्रदीप ! समाज ने जब हमारे नाश न्याय नहीं किया तो फिर समाज की हमें क्या चिन्ता है ।”

“नहीं ऐसा मत कहिये”

“प्रदीप ! मैं तही समझती थी कि तुम इतने बुजदिल निकलोगे । अब मुझे तुम्हारे वाप और समाज का डर नहीं है नो तुम क्यों घबर रहे हो । क्या तुम्हें मैं पसन्द नहीं हूँ ।”

“आप तो साक्षात् सौन्दर्य की मूर्ति है । आपको देखकर किसका दिल नहीं हिल जायगा । लेकिन आप परिस्थितियों को जानती हैं ।”

‘उन परिस्थितियों का हम तुम दोनों मुकाबला करेंगे’

‘कैसे’

‘गैम्, कि हम दोनों इस घर में निकल चले और फिर कहीं दूसरी जगह चलकर अपना घर बनायें।’

प्रदीप ने निर्मला के इन शब्दों को सुनकर, प्रकसमान उसके चेहरे पर दृष्टि डाली, तो उसे लगा, जैसे कि निर्मला का सौन्दर्य उसके हृदय में समा गया है। उसे कुछ गुदागुदी भी महसूस होने लगी। वह आगा पीछा सब भूल गया। वह अपने हृदय पर नियन्त्रण न रख सका और निर्मला की बात जो उनके गले में पड़ी हुई थी उसने उन्हें अपने आँठों से दूब लिया निर्मला और प्रदीप एक दूसरे के प्रेम में डूबने पागल हो उठे कि वह अपने हाथ और हवा में भी लगे बैठे। और फिर उसी दिन दोनों न जाने कहाँ चले गये ?

दोपहर के पश्चान लगभग एक बजे दामोदर बाहर में घर वापस आया तो घर में निर्मला और प्रदीप दोनों में से किसी को न पाकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। दरवाजे के पास बैठे हुये नीकर में दामोदर ने पूछा तो नीकर ने उसे बताया कि वह सुबह बाजार सब्जी लेने गया था किन्तु जब वापस आया तो निर्मला और प्रदीप दोनों में से किसी को नहीं पाया। दामोदर नीकर की बात सुनकर पहिले तो यह समझा कि शायद निर्मला पड़ोस में किसी के घर चली गई हो किन्तु जब उसने निर्मला के कमरे में जाकर देखा तो सफ खुला पड़ा था। उसमें एक पैसा भी नहीं था। निर्मला की अटेची जिममें निर्मला के हजारों रुपये के आभूषण थे वह भी कमरे में नहीं थी। दामोदर को यह देखकर पसीना आ गया और वह सर पकड़ कर बैठ गया। उसने निर्मला की सा के पास तुरन्त आदमी भेजा किन्तु वहाँ भी कोई पता न चला।



नहीं कर उमर कम मिल निम्नता उमर ना क्या बने याड ...  
इसलिये उमर निम्नता की ओर देखकर कहा ।

‘माँ क्या बात है’

‘तुम मुझे माँ बन लो’

‘क्यों’

‘इसलिये कि तुम्हारे बाप ने अपनी काम बसनाओं को तुम्हारे  
लिये बुझाये से मुझसे विवाह रखाया है । विवाह तो मेरा तुम्हारे साथ  
होना चाहिये था ।’

‘किन्तु अब ऐसा सोचना भी आपके लिये पाप है’

‘प्रदीप ! तुम एक अप्रद्वैत मौजवान होकर ऐसा बात कर रहे हो ।  
एक बूढ़ा जवान लडकी के साथी करे यह पाप है या एक जवान लडकी  
जवान लडके से प्यार करे यह पाप है ।’

‘आपका मतलब’

‘प्रदीप ! मेरा मतलब यह है कि मैं तुमसे प्यार करती हूँ’

‘लेकिन, पिता भी से आपकी साथी हीं बुझी है । यह कैसे सम्भव  
होसकता है कि आप मुझसे प्यार करे, समाज हम दोनों को क्या कहेगा’

‘प्रदीप ! समाज ने जब हमारे साथ साथ नहीं किया तो फिर  
समाज की हमें क्या चिन्ता है ।’

‘नहीं ऐसा मत कहिये’

‘प्रदीप ! मैं नहीं समझती थी कि तुम इनसे बुजदिल निकलोगे ।  
जब मुझे तुम्हारे बाप और समाज का डर नहीं है तो तुम क्यों घबरा  
रहे हो । क्या तुम्हें मैं पसन्द नहीं हूँ ।’

‘आप तो साक्षात् सौन्दर्य की मूर्ति हैं । आपको देखकर किसका  
दिल नहीं हिल जायगा । लेकिन आप परिस्थितियों को जानती हैं ।’

‘उन परिस्थितियों का हम नुम दोनों मुकाबला करेंगे’

‘कैसे’

‘मैंने, कि हम दोनों इस वर में निकल चले और फिर कहीं दूरी जगह चलकर अपना घर बनाये।’

प्रदीप ने निर्मला के इन शब्दों को सुनकर अकसमांत उसके चेहरे पर दृष्टि डाली तो उसे लगा, जैसे कि निर्मला का मौन्दर्य उसके हृदय में समा गया हो। उसे कुछ बुदबुदी भी महसूस होने लगी। वह आगः पीछा सब भूल गया। वह अपने हृदय पर नियन्त्रण न रख सका और निर्मला की बातों जो उनके गले में पड़ी हुई थीं उनमें उन्हें अपने ओठों से बूम लिया निर्मला और प्रदीप एक दूसरे के प्रेम में इतने पागल हो उठे कि वह अपने हाथ और हवा में भी खो बैठे। और फिर उसी दिन दोनों न जाने कहाँ चले गये ?

दोपहर के पश्चात लगभग एक बजे दामोदर बाहर से घर वापस आया तो घर में निर्मला और प्रदीप दोनों में से किसी को न पाकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। दरवाजे के पास बैठे हुए नौकर से दामोदर ने पूछा तो नौकर ने उसे बताया कि वह सुबह बाजार सवारी लेने गया था किन्तु जब वापस आया तो निर्मला और प्रदीप दोनों में से किसी को नहीं पाया। दामोदर नौकर की बात सुनकर पहिले तो यह समझा कि शायद निर्मला पड़ोस में किसी के घर चली गई हो किन्तु जब उसने निर्मला के कमरे में जाकर देखा तो सफ़ खुला पड़ा था। उसमें एक पैसा भी नहीं था। निर्मला की टोटीची जिन्से निर्मला के हजारों रुपये के आभूषण थे वह भी कमरे में नहीं थी। दामोदर को यह देखकर पत्नीना आ गया और वह सर पकड़ कर बैठ गया। उसने निर्मला की मा के पास तुरन्त आदमी भेजा किन्तु वहाँ भी कोई पता न चला।

तब से अब तक प्रदीप और निर्मला का कोई पता नही लगा कि वह कहा चले गये । लाला दामोदर दाम के पास जो भी रुपया, प्राभूपण आदि मेफ मे रखे हुये थे वह सब भी निर्मला ही लेकर चली गई । अब बेचारे दामोदर दाम गरीबी की हालत मे दिन रात अपने जीवन के अन्तिम दिनों को निराशा और दुख के दानावरण मे व्यतीत कर रहे है । जो घर निर्मला और प्रदीप के चाद और मूर्य जैसे मुन्दर मुखडो मे जगमगाता रहता था, आज वहां नहूतत बरस रही है । नगर मे निर्मला और प्रदीप के भाग जाने पर नाना प्रकार की चर्चये होती रहती है, और सभी लोग दामोदर को दोषी ठहराते हैं कि उसने बुढापे मे निर्मला जैसी मुन्दर लड़की से प्रदीप का विवाह न करके अपना विवाह रचाया और उसी का यह दुष्परिणाम भुगतना पड रहा है ।

---



## पागल कुत्ता

जब कुत्ता पागल हो जाता है तो फिर वह हर किसी पर काटखाने को दौड़ने लगता है। यहाँ तक वह अपने मालिक को भी भूल जाता है और अकसर उसे भी काटखाने को भपटता है। यही दशा विलकुल सोमसिंह की थी। वह जरा सी पदवी पर पहुँचता अपने पराये सबको भूलकर, अपनी शक्ति के घमण्ड में लोगों को ऐसे ही परेशान करने पर तुल रहता था, जैसे की पागल कुत्ता। माँ बाप के बहुत कुछ सम्कार भी संतान पर पड़ते हैं। सोम का बाप भी इसी गाँव के, मनाज में यहाँ तक कि अपने परिवार में उलझता रहता और दूसरों की बुराई करने, दूसरों से ईर्ष्या रखने में, अपना बड़ा गौरव समझता था। यह सब अवगुण सोम को अपने बाप से विरासत में मिले थे।

सोम जब स्कूल में पढ़ता था तभी से वह सारे अबगुणों से भरपूर था। वह सदैव अपने साथियों और सहपाठियों में दुर्व्यवहार करता। उन से ईर्ष्या द्वेष रखता और हर समय दूसरों की बुराई करने और दूसरों का बुरा चाहने में ही अपने उद्देश्यों की पूर्ति समझता था। वह बड़ा लोभी भी था। अपने छोटे से लाभ के लिये दूसरों को बड़ी ने बड़ी क्षति पहुँचाने में जरा भी सकोच नहीं करता था। यदि उसकी कक्षा में किसी को पुरस्कार मिलता या कोई छात्र अच्छे नम्बरों से पास हो जाता तो उसके हृदय में उस छात्र के विरुद्ध ईर्ष्या की आग भड़क उठती थी। यदि कक्षा में कोई अध्यापक किसी छात्र के अच्छे गुणों या उसके पठन-पाठन की तारीफ करता तो सोम का दिल क्रोध से काप उठता था। इस पर भी सोम सदैव यह चाहता था कि लोग उसकी प्रशंसा करें, लोग उसकी प्रतिष्ठा करें और उसको अपना नेता मानें। नेता बनने की तो उसकी इच्छा इतनी तीव्र थी कि जब वह कालिज में पहुँचा, तो न जाने कालिज की

किन्तु सभ्यता और साहित्यिक सभ्यता की महत्त्वता के लिए उम्मीदवार बनता रहा किन्तु अपने दुर्घटित्व से उसे हर बार मनफलता का ही मुँह देखना पड़ा। जब वह अपने रास्ते में जाता तो गवि बायो पर अपने मुँह मिया भिदू बनकर अपनी प्रशंसा के पुल बाधता, किन्तु भाव के लोग तो उसके सभी अवगुणों में अपनी भावि परिचित थे, इसलिए वहाँ उसकी तनिक भी बाल नहीं गलती थी। पहले लिखने में तो वह इतना इहमगज था कि एक एक कला में कई कई बार फेल होता, किन्तु फिर भी उसका वाप अपने लड़के की तारीफ के सर्वश्रेष्ठ गुण बाधता रहता था और सोम अपने वाप के मुँह में अपनी तारीफ चुनकर लुगी से छुला नहीं मसाला था।

सोम काविज में कब तक अपने भाव्य को क्रोमता। काविज ३००० में कई वर्ष फेल होने के बाद उसने काविज में नाम कटाकर नेतापीनी की भाव छानना आरम्भ करदी। जाल जाल में भावकाल तक भावी टोपी, बन्द काव्य का घोट और स्पेद खट्टा का श्रेणी पहिले दुर्घ काव्य का रूप बनाये वह घोट से लेकर का नेताओं तक की चौखट पर माथा टेकता रहता। किन्ती को अपना गुण, किन्ती को बुरा भाई, किन्ती को अपना भाव विधाना गडकर प्रसंगिकी और कौमिता से जाने की सर्वश्रेष्ठ उच्छा प्रकट करता रहता था। सुभाषण करने से तो उन्हें प्राम प्राप्त करलिया था। जिम पार्टी का के नाम जाल दोनों रूप जोडकर उसके घेरों पर गिर जाता। कुछ दिनों नेता भी थे किन्तु अपने तैर दुर्घाने में आनन्द का अनुभव होता था अतः गिर नेताओं से वह कुछ के मुँह लग गया। कुछ ही दिनों में सोम ने उन्ही से न एक दो नेताओं की सुभाषण के पुल बाधकर उनकी पार्टी में विधान सभा का टिकट प्राप्त कर लिया। बिन्ती के भावों से छीका हुआ और सोम उस पार्टी की महायता ने विधान सभा का सदस्य भी भूत लिया गया। कुछ ही दिनों में जिम पार्टी से सोम चुना गया था उसका मन्दिमण्डल भी बन गया। सोम तो अपने

का जना जन्म या कि जन्म का ही मन्त्रिमण्डल में जाने की इच्छा में दन्त ही उठा। सोम को उम्मे दल के नेताओं ने श्रमभाया भी कि अर्थ। वह मन्त्रिमण्डल में शामिल होने की अनिक दौड़ शुरू करे क्योंकि वह गिबल तथा विभापक है, और वह टिन्कल युवावस्था में है, किन्तु सोम को चेत करा। उम्मे मन्त्रिमण्डल में शामिल होने के लिये दिग्गम एक कर दिया और वह इन्ही उद्देश्य में गुलह में शाम तक पामनों की प्रकार नेताओं के दरवाजे के चक्कर काटता रहता था। अन्त में जब उम्मे यह देना कि उसके प्रयास मफल नहीं हो रहे हैं, तो उसने अपने दल के मन्त्रिमण्डल को गिराने के लिये दूसरे दलों से माजिज करना आरम्भ कर दी। सोम जिन दल का सदस्य था उस दल का बहुमत केवल दो ही बार सदस्यों में था। आ सोम अक्सर पाकर अपने दल को छोड़कर दूसरे दल में जा सिका। उम्मे दल के नेताओं को तो सोम जैसे इन बदनुओं की ही आच्छादता थी, अतः सोम और एक दो और दलबद्धियों के कारण पुराना मन्त्रिमण्डल गिर गया और नया स्थापित हुआ। सोम क्योंकि अपने दल को बदलकर केवल सरकार में शामिल होने को ही आया था, अतः उसे भी उपमन्त्री बना दिया गया।

सोम उपमन्त्री क्या बना, उसे ऐसा लगा जैसे कि समस्त सत्ता की दौलत और वादगाहत उसे ही प्राप्त हो गई हों। वह आपे से बाहर अपने ही भाव और जिले के लोगों पर रोव गाठना और जिन लोगों ने या जिन दल ने सोम को टिकट देकर विधान सभा का सदस्य बनाया, उनसे से प्रति कोई उसे कही रास्ते में मिल जाता तो सोम उनसे मँह फेरकर निकल जाना था। जिन लोगों ने चुनाव से उसे रुपये जैसे या आदर्शियों की सहायता प्रदान की, सोम उल्टा उन्हीं को नीचा दिखाने की योजनाएँ बनाने लगा। सोम की इन गिरी हुई और जलीज हूरकतों से सभी अच्छे और प्रतिष्ठित लोग उसे दिल ही दिल में बुरा और निक्कम कहते किन्तु गुन्डे, चापलूस और स्वार्थी व्यक्ति सोम को प्रातः

काल में सायंकाल तक चारों ओर से घेरे रहते और उसकी खुशामद की बड़ी बड़ी रेत की दीवारें खड़ी करते रहते थे। सोम ऐसे चापलूस और स्वार्थी लोगों की खुशामद में अपनी हैसियत को ऐसा भूला कि उसे सन्धी की लच्छेदार शतों में आनन्द अनुभव होने लगा।

यद्य जब से सोम उपमन्त्री हुआ उसमें बदला लेने की भावना भी तीव्र हो उठी। ऐसे समस्त व्यक्तियों से उसने बदला लेने की ठान ली जिनमें कभी भी उनकी व्यक्तिगत दृग्मती, रजिश या भगडा रह चुका था। उसने अपने पद का दुरुपयोग करके उनमें से बहुतों पर पुलिस में कहकर झूठे चालान करा दिये और उन पर मुकदमे चला दिये। कितने ही उसके विरोधियों को जेल का मुँह देखना पड़ा। उसके कितने ही बेचारे नौकरी में निकाले गये और बेरोजगार होकर अपने बीबी बच्चों के पालन-पोषण में भी वंचित रह गये। उसके समस्त गुन्डे और बदमाश साथी जिनमें कुछ हिस्ट्रीशीटर, कुछ शराबी, कुछ चोर बाजार करने वाले और कुछ पुलिस के दलाल थे गुलछरें उड़ाते फिरते थे। यह सोम के उपमन्त्री के नाम को मग्नाम बेचते फिरते थे। जनता में रुपया ऐंठने में उनके परिवारे थे। किसी को मोटर नारी का परमिट दिलाने के बदले में, किसी को कोटा और लाइसेंस दिलाने के प्रलोभन में, किसी को कन्ट्रोल और राशन की दुकान दिलाने के लानच में, मनमाना रुपया वसूल करते। जिसका काम नहीं भी होता था वह भी बेचारा डर के कारण अपना रुपया लौटाने को कहने का साहस नहीं करता था। इस प्रकार उपमन्त्री के नाम में वह बूटमार आरम्भ होगई कि मज्जन और भले व्यक्तियों का तो उसके क्षेत्र में रहना ही दभर होगया। न जाने बेचारे कितने भले और गरीब लोग उपमन्त्री के एजेण्टों और चापलूसों की धमकियों का शिकार बनकर अपना गांव और मकान छोड़कर चले गये। कुछ लोगों ने मुख्य मन्त्री तक उसके कारनामों को पहुँचाने का साहस भी किया, किन्तु मुख्य मन्त्री

पर उसका ऐसा रोव गान्धिव या कि उल्टा चोर कोतवान को डाँटने वाला उदाहरण हुआ। उममे शिकायत करने वाले सभी व्यक्तियों को वह खरी खोटी मुनाई कि दुबाग किसी का साहम उम तक पढ़चने का नही हुआ।

एक दिन मोम अपने कार्यालय में बैठा हुआ अपने खुशामदी और डलालो से बाने कर रहा था कि इतने मे एक नौजवान लडकी जिसकी आयु लगभग १८ या १९ वर्ष के होगी, जिसका रंग गोरा, बड़ी बड़ी आँखे, मुडोल शरीर जैसे कि सौन्दर्य की साक्षान प्रतिमा हो, रोती हुई सोम के कमरे मे पहुँची। मोम ने अन्दर मे किसी के रोने की आवाज सुनी तो उमने अपने चपरासी से पूछा कि रोने वाली महिला कौन है। चपरासी ने बाहर निकल कर देखा और भट अन्दर जाकर सोम को बता दिया कि कोई लडकी उममे मिलता चाहती है, जो बाहर खड़ी हुई रो रही है। लडकी नाम मुनते ही सोय ने भट चपरासी को उसे कमरे के भीतर दुला बाने को कहा। दरवाजा खुला और लडकी कमरे के भीतर दाखिल हुई। मोम ने नीचे मे ऊपर तक लडकी के चेहरे पर निगाह डाली। उमे ऐसा लगा जैसे कोई विजनी के करेण्ट उमके शरीर मे उतर गयी हो। लडकी का सौन्दर्य देखकर उमे ऐसा लगने लगा जैसाकि उसका हृदय ही उसके अधिकार में न रहा हो। एक मिनट तक श्वासोश रहकर उसने लडकी की ओर देखकर पूछा।

“क्या बात है, तुम कौन हो और क्यों परेशान हो ?”

श्रीमान, मेरा नाम रुक्मणी है। अभी मेरे विवाह को दो ही वर्ष हुए थे कि मेरा पति मोटर दुर्घटना का शिकार होकर मर गया। अब मैं बालविधवा के रूप मे अपने जीवन को काट रही हूँ।”

“ओह ! अब मैं समझा, मुझे तुम्हारी कहानी सुनकर बड़ा दुःख हुआ। बताइये मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ” सोम ने रुक्मणी की आँखो में आँसू डालकर पूछा।



श्रीमान ! आप उपमन्त्री हैं, मैं आप हाँ कहे जाने की एक असांगित सहिला हूँ। आप मेरी दीन दया पर दया करके मुझे कोई ऐसी नौकरी दिला दीजिये ताकि मैं अपना पेट भर सकूँ। स्वमणी ने तीब्रो निगाहों से उत्तर दिया।

“लेकिन स्वमणी ! तुम जानती हो कि आजकल पड़े-लिखे व्यक्ति नाकनी नहीं पाते हैं, फिर तुम को कैसे सफ़ाई नौकरी मिल सकती है ?”

“श्रीमान ! मैं भी हाई स्कूल पास हूँ”

“ओह, बेचुकी, नक तो मैं तुम्हें कहीं न कहीं नौकरी दिना दूँगा”

“इसके सिवा मैं आपकी मदद आसानी रहूँगी” स्वमणी ने आभार प्रकट करने हुए कहा।

सोम दो मिनट तक कुछ सोचना रहा, फिर एक साथ कुछ सोच बग़ैरे बोला।

“अच्छा स्वमणी ! मैं शाम तक सोच सम्भरकर तुम्हारे लिये कोई नौकरी तलाश करने को कोशिश करूँगा। तुम शाम को सात बजे के लगभग मुझे मिलाता”

“बहुत अच्छा, श्रीमान जी ! मैं आपका कभी एहताब नहीं भूलूँगी”

वह कहकर स्वमणी चली गई, किन्तु सोम के दिल की गुदगुदी घटने के बजाय बढ़ती ही गई। उसके पास बैठे हुये उसके चापलूस और खुशामदी भी यह समय गंज कि सोम स्वमणी के सौन्दर्य पर मोहित हो गया है। वह सोम को लायकोश देखकर उसके कमरे से उठकर चले गये। उधर सोम विचारों के सागर में उछलता, डूबता इस परिणाम पर नहीं पहुँच रहा था कि स्वमणी को प्राप्त करने के लिये वह क्या साधन जुटाये। उसका मन किसी काम में नहीं लग रहा था। यदि कोई कर्मचारी कोई कागज लेकर उसके कमरे में आता तो वह उसे मना कर देता। वह बग़ैरे सर पकड़े

व्यक्ति की कर्मी पर निवा... उमदा कमचारा और  
 २५ - यह समझ कि शायद उसकी परिचय कुछ ठीक नहीं है। इतने में  
 ही उमदा अपने अर्धनी को लेकर करके बोटिंग जाने की कहा। कुछ ही  
 मिनट में डाइवर बोटिंग के लिए आ गया, और सोम अपने कमरे में भीटा  
 घर धल गया। घर में पहुँचकर वह अपने बाल कमरे में जाकर  
 बैठ रहा। उसकी स्त्री गायत्री सोम को परवान देकर तुरन्त उसके पास  
 पहुँची और उसने सोम की ओर दौड़कर पूछा।

‘बधा वन है, यात्र आप कुछ पंजाब नजर आ रहे हैं।’

‘नहीं भावणी! ऐसी कोई बात नहीं है, कुछ मग में दर्द हो रहा है।’

‘तो आप पीड़ी देर आराम कर लीजिए।’

‘हाँ, मैं भी यही भोज रहा हूँ, तुम किनी जो मेरे राम मत आते  
 देना।’

‘बहन अच्छी।’

दह कहकर गायत्री चली गई। सोम अपना मुँह लोटकर खानपान  
 पर पड़ रहा। दह वड़ी बेचैनी से आभ के मात अजे का इन्तजार करने  
 लगा। कब रुकमणी आये और बत्र वह उमके मान्दर्य से अपनी आंखे  
 भेके। इसी उंचे ब्रुन में वाम हो गई। उन्नर उत्तमे मिलने के लिये उसके  
 खुशामदी बराबर आते रहे, किन्तु गायत्री सबको वापस करती रही।  
 सायकाल के मात बजने वाले थे। सोम ने उठकर हाथ मुह धोया और  
 वह ऊपर कमरे में चला गया। उमते अपने अपरासी को बुलाकर कह दिया  
 कि दोपहर जो लडकी उमके दफ्तर में आई थी वह पुन मात बजे आयेगी  
 और उसे दूर ऊपर उमके पास भेज दे।

टोक मात बजे बघनाई वाहन से रुकमणी को लेकर ऊपर वाले  
 कमरे में सोम के पास पहुँचा। रुकमणी ने दोनों हाथ जाँडकर उपमत्ती  
 को नमस्ते की। उपसन्धी ने रुकमणी को उगारने से सामसे पड़ी कुर्सी  
 पर बैठने को कहा। रुकमणी अपनी लिपियों को नीचा करके कुर्सी पर

बठ गई, सोम ने नीचे से ऊपर तक रुकमणी को दखा और उसे ऐसा लगा कि रुकमणी का सौन्दर्य उठ अपनी ओर खींचे लिते जा रहा है। उसने दो मिनट चुप रह कर रुकमणी की ओर देखने हुए कहा।

“रुकमणी ! मैंने अपने विभाग के द्वारा तुम्हागी नौकरी की बहुत कोशिश की किन्तु मुझे नफलता नहीं मिली”।

“फिर क्या होंगा। क्या मुझे निराश लौटना पड़ेगा” रुकमणी ने राखो से आसू डबडबाने हुमे कहा।

“नहीं रुकमणी ! मैं तुम्हें निराश नहीं करूंगा। उसके लिये मैंने एक रास्ता निकाल लिया है”।

“आपने बड़ी कृपा की”

“आपकी क्या होगी ! रुकमणी ने आभार प्रकट करते हुये कहा।

“और देखो रुकमणी ! यदि तुम्हारे पास किराये का मकान हो तो तुम उसे छोड़कर यही मेरे मकान में आज्ञाओं में तुम्हें छत पर एक कमरा दे दूंगा।

“नहीं मरकार ! यकान तो मेरे पति का है उस में ऊपर के भाग में मैं रहती हूँ नीचे एक किगयेदार है। जो तीस रुपये मासिक किराया देते हैं। अब तक उसी किराये में गुजर बत्तर करती रही हूँ।”

“अच्छा तो ठीक हैं ! कल से तुम सायकाल ७ बजे से रोजाना बच्चों को पढ़ाने आ जाया करना।”

‘रुकमणी जी अच्छा’ कहकर चली गई। उधर जाते समय गायत्री की निगाह रुकमणी पर पड़ी। उसने ऊपर के कमरे में पहुँच कर सोम से पूछा।

“क्यों जी ! यह लड़की कौन थी जो अभी ऊपर से गई है।”

“गायत्री ! कुछ न पूछो, बेचारी गरीब बिधवा थी। मुझे उस पर रहम आ गया। मैंने उसे कल से बच्चों को पढ़ाने को कह दिया हूँ।”

‘किन्तु बच्चों को जो मास्टर साहब पढ़ाने आते हैं। उनका क्या होगा।’

गायत्री ! डिप्टी मिनिस्टर के बच्चे होतहार बनने चाहिये । मास्टर गहब मुनद् को अंग बह लडकी याम को बच्चों को पढायैनी ।’

गायत्री सोम की बान चुनकर ब्यामोश होकर नीचे चली गई । उधर सोम का यह हाल था कि रुकमणी के इन्तजार में उसे एक एक घड़ी एक दिन जैसा सालूम होंगे लगी । दूसरे दिन सोम अपने दफ्तर में गया तो वहाँ उसका दिल किन्ही बान करने को नहीं लगा । मिलते वालों को भी उसने मना कर दिया । मिलते उसके खुशामदी निहू, थे उनसे भी उसने कोई गचि बात करने में नहीं ली कुछ देर बैठ कर सभी डधर उधर ही गये सोम के मेज पर सभी फाइने बँनी की बँनी ही रक्खी रखी । वह चार बजे में पहिले दफ्तर में धर चला गया । धर पहुँच कर सोम ब्याय दावना से निबिर्ण होकर ऊपर के कमरे में जा बैठे और अपने चपरासी में सभी आने जाने वाले लोगों को उसके पास तक आने में मना कर दिया ।

ठीक सायकाल के सात बजे रुकमणी सोम के धर पहुँची । चपरासी उसे ऊपर के कमरे में ले गया जहाँ सोम बैठा था । रुकमणी ने सोम को दोनों हाथ जोडकर नमस्ते ली । सोम ने रुकमणी को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और चपरासी को नीचे से बच्चों को बुलाने का आदेश दिया । बच्चे अपनी किताबें लेकर आगये और रुकमणी ऊपर कमरे के आगे बराडे में बैठे बई पढानी रखी । एक वन्टे तक पढाने के बाद जब घड़ी में ८ बजने की टा-गन की आवाज हुई, रुकमणी ने बच्चों को छुट्टी देकर स्वयं नीचे जनि को नगर बई । सोम अन्दर बैठे लगानर रुकमणी के सौन्दर्य से अपनी आँखों की पगम ब्रुआ रहा था । उसने अहिस्ता से रुकमणी का ब्यान अपनी अंग गतिर्ण करने दूए कहा ।

“रुकमणी बान मुनो”

रुकमणी ने नीची निगाहों से सोम की ओर देखकर कहा ।

‘श्रीमान जी ! क्या माहा है’

“रुकमणी मैं तुम से बहुत प्रसन्न हूँ कि तुम्हने बच्चा तो बहुत अच्छे प्रकार से पढाया”

“यह आपका ही आशीर्वाद है”

“रुकमणी ! मैं एक दो बातें इन बच्चों की पढाई के सम्बन्ध में तुम से और करना चाहता हूँ”

“आज्ञा कीजिये”

“अन्दर गार्डर ध्यान पूर्वक सुनो”

रुकमणी कमरे के भीतर चली गई। कमरे में घुसते ही सीम ने रुकमणी का हाथ पकड़कर उसे गले से लगाना चाहा, किन्तु रुकमणी ने पीछे हटकर अपने हाथ को छुड़ाते हुये हाथ में भरकर कहा :

“यह आप क्या कर रहे हैं”

“रुकमणी मैं तुम से प्यार करता हूँ”

“माफ कीजिये ! मैं आपको ऐसा नहीं मसकती थी। मैं तो आपको एक सज्जन बना मसककर आपकी शरण में आई थी”

रुकमणी ! इसमें क्या बुराई है ! तुम्हारी यह जबानी न जाने कहा जाकर टकरायेगी। उसमें पत्रिले अगर तुम मेरी बाहों में आकर बैठ जाओ तो तुम्हारे भी मारे दुःख दूर हो जाय और मेरी आशाओं के फूल भी खिल उठेंगे :

“प्राण को धर्म आना चाहिये। आप बीबी बच्चों वाले होकर एक गैर स्त्री से इस प्रकार नैतिकता से गिरी हुई बातें कर रहे हैं”

“रुकमणी ! तुम अपने आप को भूलकर मेरे सर-पर चढती जा रही हो। तुम्हें यह पता नहीं कि मैं एक उप-नन्दी हूँ और सरकार का हर अधिकारी मेरे इशारे पर नाचता है। अगर मैंने किसी को इशारा भी कर दिया तो तुम्हारा पता भी नहीं चलेगा कि तुम कहाँ समा गईं”

'उप पन्त्री जी ! ज्ञान भले ही सरकार हो किन्तु आप भगवान नहीं हो सकते , मे ज्ञान एक भगवान के शरीर पर जिन्दा हैं आप भी पदायता के बिना भी जिन्दा रहेंगी'

"तो तुम अपनी जिद को नहीं छोड़ोगी" मोम ने श्राव्ये लाल करके कहा ।

"आज सुने ज्ञाने ईश्वर वरना मे ऐसा और मचाऊंगी कि आप की इज्जत मिट्टी से मिल जायगी

शोर का शब्द सुनकर मोम शॉप गया । उसे यह भय था कि वही उनका यह राज उसकी स्त्री और उनके घर बाधो पर न मूल जाय । इन वह उस समय तो शहर हूत गया । एकमगुनी श्राव्ये से आन्त डबडबाये हुये द्रत से नीचे उतर कर अपने घर चली गई । किन्तु मोम के दिल की आग और अधिक भडक उठी और अब अपने यह आन श्रिया कि उसे कुछ भी क्यों न करना पड़े वह एकमगुनी को या तो अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये मजबूर करके रहेगा या फिर उसे उसकी गुमनामी का मजा चखायेगा । मोम इसी उपेठ बुन से पडा रहा । प्रथम गत भय खारपाई पर एकमगुनी के श्वालय से उधर से उधर करवते बदलता रहा । सुबह होते ही चाप दाशते से फाग्य होकर उसने अपने एक-दो चापगुनों को बुलवाया । उनमें उसने अलग से मलाह की और एकमगुनी को हर शीघ्र पर आत्म समर्पण करने की योजना बनाने का आदेश दिया । मोम के इन माशिवो से एक शिम्प्रीर्वाटर भी था । जिसका अनेको बार चोरी, डकैती और बदमाशी से चालान हो चुका था । किन्तु हरबार वह गवाहो को डरा बमका कान नोड लेता था और नूट जाता था । अब जब से वह मोम की चापलुगी करने वाले शिगोह से दाखिल हुआ तब से तो वह और अधिक सीना तान कर बाजार में तिरावने लगा था । सब लोग जानते थे कि यह नगर का लया हुआ गुन्डा है किन्तु कोई उसकी ओर उगली उठाने का साहम नहीं रखता था । क्योंकि उसे उप-पन्त्री का सरक्षण प्राप्त था । मोम की बात सुनते ही उसने सीना तान कर कहा ।

“सरकार ! इतनी छोटी सी बात के लिये आप परेशान है । अगर आप हुकम दे तो मैं एकमरणी को चारपाई सहित उठा लाऊ और आपके कदमों में डाल दूँ ।”

“मुझे तुम में ऐसी ही उम्मीद थी, लेकिन इन सब बानों की खबर किमी को कानों कान नहीं होना चाहिये” सोम ने आहिस्ता से कहा ।

“नहीं सरकार ! आपको डर क्या है । हमारा कौन क्या बिगाड लेगा । हम सरकार हैं ! सब सरकारी नाँकर हमारे तावेदार है ।” गुन्डे ने मूछों पर ताव देकर कहा ।

“फिर भी हमें सतर्क रहकर काम करना चाहिये”

“बहुत अच्छा सरकार ! आप सिर्फ एक हफ्ता की मोहलत दीजिये । इसी बीच में आप देखें एकमरणी आपके कदमों को चुमेगी”

सोम ने उस गुन्डे की पीठ बड़े प्यार से ठोकते हुए उसे शाबासी दी । वह गुन्डा सोम के पैर छूकर बाहर निकला । वह वहाँ में सीधा एकमरणी के मकान पर पहुँचा । एकमरणी अकम्भात अपने किसी रिश्तेदार के घर चली गई थी । उसके मकान के नीचे जो किरायेदार रहते थे, उस गुन्डे ने दरवाजे पर धक्का दिया तो किरायेदार निकल कर आया । वह उस गुन्डे को जानता था कि यह नगर का सबसे बड़ा बदमाश है । वह यह भी जानता था कि उसे उप-मन्त्री का सरक्षण प्राप्त है । वह उसे देखकर डर से कापने लगा उसने डरते हुये पूछा ।

“कहिये आप किस की तलाश में आये है ।”

“आपके यहाँ कोई एकमरणी नाम की लडकी है”

“जी हाँ । वही तो इस मकान की मालिक है हम तो किरायेदार हैं”

“वह कहा है”

“वह कहीं अपने किसी रिश्तेदार के घर चली गई है शाम तक लौटिगी”

“ठीक है तो मैं शाम को ही उससे बात कर लूँगा”

यह कहकर वह गुन्डा चला गया। किरायेदार मन्त्राशय मे इतना साहस कहा था जो यह पूछते कि रुकमणी मे वह क्या बात करना चाहता है। सायकाल को लगभग सात बजे जब रुकमणी वापस आई तो किरायेदार ने उसे सब कुछ बताया। रुकमणी समझ गई कि उस गुन्डे को उप-मन्त्री ने भेजा होगा। उसे अब अपनी इज्जत आबरू बचाने का कोई रास्ता दिखाई नही दे रहा था। वह ऊपर जाकर खूब मिसक र कर रोई। अभी वह रो ही रही थी कि वह गुन्डा आ गया और किरायेदार ने ऊपर रुकमणी को जाकर आहिस्ता से आवाज देकर कहा।

“रुकमणी बंटी ! वही गुन्डा नीचे लडा मुझे बुला रहा है।”

“रुकमणी ने एक मिनट मोच कर किरायेदार से कहा”

“बाबाजी ! आप उसमे कहें कि रुकमणी की तबियत खराब हो गई है और वह नीचे आने मे मजबूर है।”

किरायेदार ने उससे नीचे जाकर कह दिया। किन्तु उस गुन्डे को कहा विश्वास था ; उसने किरायेदार से कहा कि वह ऊपर रुकमणी को देखना चाहता है। किरायेदार ने भट रुकमणी को खबर दी कि वह गुन्डा ऊपर उसे देखने आ रहा है। रुकमणी भट चारपाई पर पट गई और जोर से कराहने लगी। नाकि वह गुन्डा समझ जाय कि वास्तव मे रुकमणी की तबियत खराब है। ज्यों ही गुन्डा ऊपर आया रुकमणी और जोर जोर से कराहने लगी। गुन्डा यह समझ कि वास्तव मे रुकमणी बीमार है। गुन्डा उसे देख कर चला गया उधर रुकमणी प्रह समझ गई कि अब उसे अपनी आबरू बचाना कठिन ही नहीं वरन असम्भव है। बहुत कुछ सोच विचार कर उसने दिल में यद्दी ठान लिया कि वह आत्म हत्या करले। उसने एक कागज निकाल कर कुछ लिखा और तत्पश्चात आधी रात के लगभग उसने अपनी पहिने की एक धोती को छत के कुण्डे मे बांधा और धोती का फन्दा अपने गले मे डाला। इस प्रकार उसने फांसी खाकर आत्म हत्या करली।



दूसरे दिन जब बहुत दिन चढ़ गया और रुकमणी को किरायेदार और उसकी स्त्री ने नहीं देखा तो वह यह समझे कि यायद रात्रि को देर तक जानने और परेगान रहने के कारण वह अभी तक सां रही हो किन्तु जब दोपहर हो गया तो किरायेदार और उसकी स्त्री को कुछ बिना हुई दोनों ऊपर गये। अन्दर से दरवाजा बन्द था। दोनों ने दरवाजा खटखटाया जहाँ रुकमणी नहीं बोली तो किरायेदार ने पीछे खिडकी की दरज में से जाकर देखा। रुकमणी लटकी हुई थी। उसकी जवान बाहर निकली हुई थी। किरायेदार हक्का बक्का रह गया। उसने अपनी स्त्री ने बबराकर कहा।

“अरे ! यह क्या हो गया ? रुकमणी ने फार्मि खाली”

किरायेदार की स्त्री फट र कर रोने लगी। किरायेदार भागा हुआ कोतवाली पहुँचा और उसने पुलिस को सूचना दी पुलिस अधिकारी भागे हुये रुकमणी के घर पहुँचे। उन्होंने सिपाहियों को दरवाजा तोड़ना का आदेश दिया। कंधरे का दरवाजा तोड़ा गया। रुकमणी की लाश को फार्मी से उतारा गया। जब उनकी लाश पोस्टमार्टम को भेजी गई तो उसकी दोती में एक कागज का पर्चा दया हुआ निकला उसमें लिखा था :

“मैं एक पागल कुत्ते में दबने के लिये अपने जीवन की आहुति दे रही हूँ। वह पागल कुत्ता कई दिनों से मुझे काटने को बाँड़ रहा है। अब तक मैं उससे पीछा छुड़ानी रही किन्तु अब उसमें बचना असम्भव हो गया। वह पागल कुत्ता डली क्षेत्र का एक उप-मन्त्री है जो मनुष्य के रूप में दीनान जैसी मनोवृत्ति से मुझ जैसी अश्लेषों का कर्तव्य छूटना फिरना है। मेरा दावा उसी पर है और किसी पर नहीं।”

वह पर्चा पुलिस ने भरकार में भेज दिया किन्तु “सैदा भये कोतवान हमें डर बाहे जा” सोम के विप्लव कोई मुकदमा नहीं चला। किन्तु उस पर्चे की शोहरत सारे नगर और क्षेत्र में हो गई। और तब से सोमसिंह पागल कुत्ता के नाम से तमाम क्षेत्र में प्रसिद्ध हो गया। दो साल के भीतर सरकार



ना भी पतन हो गया। यों अब नौम पुनः चुनाव से खडा हुआ। काफी देर और शीलत खर्च करने के बाद भी उनकी जमानत जवाब ही गई क्योंकि उनमें से ~~उसके~~ ~~विक्रम~~ ~~द्वारा~~ उत्पन्न हो गई थीर लोग उसे पागल कुत्ता कहकर पुकारने लगे।

अब वह अपने नगर से धन और दान ले खोकर मडको पर डवर से उधर जूनिया चटखाना फिना है। यदि मुबह किमी गली या सड़क पर कोई उमका मुह भी देख लेता है तो उसकी जुवान में वही शब्द निकल पड़ते हैं। "आज सबेरे कन्वखन पागल कुत्ते का मुंह देख लिया न जाने आज क्या नहतत आये और गेटी भी नसीब हो या नहीं।"

# कीमती इन्साफ

मंगला का पति धनेश यथा नाम तथा गुरा वाला ही व्यक्ति था। धनेश के बाप तो कुछ अधिक पूजा छोड़ नहीं गये थे किन्तु धनेश एक छोटे से व्यापार में ही ऐसा मफल हुआ कि देखते ही देखते वह अपने नगर का नरपती बन गया। मंगला को यह स्वप्न में ही माल नही था कि उसकी भोग्नी महली ने बदल जायगी। वह तो एक मासूती घर की लड़की थी, प्रायः जब उमरा विवाह धनेश से हुआ था तो धनेश के पास भी एक जनरल सर्वेंट भी इजात के अतिरिक्त और कुछ भी नही था। धनेश के बाद धनेश ने घर पेट्रोल पम्प की एजन्सी ले रखी थी और उस पेट्रोल पम्प की एजन्सी में ही धनेश ने छोटा सा मोटरो की मरम्मत करने का कारखाना खोल लिया। इन दोनों धन्यों ने धनेश की क्रमशः ऐसी चमकी कि कुछ ही दिनों में उसे मोटरो की एजन्सी मिल गयी। और इस व्यवसाय में धनेश को छपन्न फाइ कर ऐसी माया मिली कि वह लक्षपति बन गया। उसने नगर के बाह्य मिडिल लाइन्स में एक ऐसा सुन्दर बगला बनवाया कि अकसर लोग घंटे में मिलने प्रातः तो उसके बगले की खुवसूरती को ही टकटकी बांधकर देखते रहते थे। मंगला तो यह सोचती थी कि भगवान ने उसे न जाने हित पुष्टों का बदला दिया है। उगीलिये जब से वह अपने पुराने मकान को छोड़कर मिडिल लाइन्स के बगले में पहुची थी रोज सुबह शाम मन्दिर में जाकर भगवान का पूजन करती और उनका लाव र धन्यवाद देती।

धनेश और मंगला जो सब कुछ मुख और विलास के होते हुये भी एक बहुत बड़ा दुख था और वह यह कि उनके कोई मन्तान नही थी। उनके विवाह को दस वर्षों ने भी अधिक वीत चुके थे किन्तु कोई बच्चा नही हुआ। दोस्तों ने न जाने कहाँ र माधु सन्ती और मन्दिरों की खाव छानी, मन्तन मांगी, जप और पाठ कराये किन्तु उनकी आशाओं के फूल

नहीं खिले। दोनों इस विस्तार में सर्वत्र बेचैन रहने थे और उन्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं देता था जिस पर चलकर वह अपनी मनोकामना पूरी कर सके। एकस्मात् एक दिन जब वह एक समाचार पत्र पढ़ रहे थे तो उन्होंने किसी डॉक्टर का विज्ञापन पढ़ा जिसका दीर्घक था।

“सन्तान न होने वाले को खुशखबरी”

इसी दीर्घक में नीचे यह दिया हुआ था कि जिन लोगों के सन्तान पैदा नहीं होती है, वह यदि डॉक्टर माह्व से जिनका कुछ नाम दिया हुआ था परामर्श ले और अपना इलाज कराये तो अवश्य सन्तान होगी।

इस विज्ञापन को पढ़ने के पश्चात् दोनों ने हुरादा लिया कि वह उन डॉक्टर महोदय के पास जायेंगे जिनसे यह विज्ञापन निकलवाया है। अतः चाय और नाश्ता करने के पश्चात् मंगला और बनेश दोनों ही डॉक्टर माह्व के पास गये। डॉक्टर ने मंगला और बनेश को बाथे का बड़े ध्यान पूर्वक मुना और उन्हें इस बात का आश्वासन दिया कि यदि वह उनके द्वारा दी गई सलाहों का विधिवत भेवन करेंगे तो अवश्य ही सन्तान उत्पन्न होगी। मंगला और बनेश दोनों ने डॉक्टर साहब से स्वा मी और जिम प्रकार डॉक्टर ने उनसे भेवन करने को कहा, दोनों ने लगातार तीन महीने तक डॉक्टर माह्व की सलाह का सेवन किया। तीन महीने के पश्चात् मंगला गर्भवती हो गई और उसने डॉक्टर के प्रति बड़ा आभार प्रकट किया। कुछ महीने बाद मंगला ने पुत्र को जन्म दिया। जिस दिन मंगला के पुत्र का जन्म हुआ बनेश और मंगला दोनों के हर्ष वी सीमा न थी। बनेश ने अपने पुत्र के नामकरण सम्कार को वही हस्तक्षेप से मंगला और नगर के लगभग सभी अधिकारों लेना और अपनी अपनी व्यक्तियों को प्रीतिभोज में आमन्त्रित किया।

नामकरण सम्कार से लड़के का नाम पड़ितो ने राशिकाल और लक्ष्मण के अनुसार राकेश रखा। मंगला और बनेश ने राकेश को बड़े लाडलप्यार से पाला और उसके लिये सभी प्रकार के माधन जिससे उसको मृदु मिले उपलब्ध किये। जब राकेश ने होता सम्भाला तो उसका दाढ़िना एक

अच्छे मन्त्रपत्रा मन्त्र म का वि ा गया जहा लामे न क बौि ती प्रार-  
म्भिक शिक्षा प्राप्त थी । जितना ही राकेश प्रापु से बढना गया उनना  
ही उसका लाड प्यार भी बढना गया । परिणाम यह हुआ कि राकेश की  
आदत घर के देखी आराम तथा आर्यक लाड प्यार के कारण बिसङ्गी गई  
और वह हाई स्कूल में ही कई वर्ष तक फेल होता रहा । जब उसे हाई  
स्कूल की परीक्षा में फेल होते द्ये कई वर्ष हो गये तो राकेश के पा पाप ने  
वह समझकर कि राकेश को स्कूल भेजना अपने धन और राकेश के समय का  
दुस्पर्शा है, राकेश को स्कूल छोड़कर घर के काम काम देखने को कहा ।  
राकेश को स्कूल में छुटकारा मिलने के पश्चात् तो पूरी आजादी मिल गई  
और अब वह घर का काम काज देखने के बजाय बुद्ध से शाम तक चार  
दोस्तों के साथ आधारा घूमना रहता था । राकेश में वह सभी आदते उत्पन्न  
हो गई जो आधारा लडकों में होती हैं । राकेश का धाप धनेज और उसकी  
माँ मभला दोनों राकेश की आदतों को देखकर चिन्तित रहने लगे । आखिर  
दोनों ने बहुत कुछ मांझ विचार कर यही उचित समझा कि राकेश का शीघ्र  
से शीघ्र विवाह कर दिया जाय ।

राकेश एक धनी बाप का बेटा था । उसके लिए विवाह की क्या कमी  
थी । जैसे ही लोगों को मालूम हुआ कि राकेश के पिता राकेश का विवाह  
करना चाहते हैं, लडकी वालों के आने जाने का धनेज के यहाँ ताता लग  
गया । न जाने लडकियों के कितने कोटों इकट्ठे हो गये । कुछ ही दिनों में  
बनेश और मणला दोनों ने राकेश की इच्छानुसार एक सुन्दर युवती रूपा  
में राकेश का विवाह निश्चित कर दिया । रूपा भी एक धनी साहूकार की  
लडकी थी और उसके माँ बाप ने भी उसे बड़े लाड प्यार से पाला था ।  
वह गरीब लोगों से दफरन करती थी और ऐसा समझती थी जैसे गरीबों  
को अमीरों की सेवा के लिए ही भगवान ने पैदा किया है । वह अपने मा  
बाप के यहाँ भी नौकर चाकरों पर ऐसी हकूमत चलाती थी कि बेचारे सभी  
नौकर उसके डेर से कापते ही रहते थे । धनी परिवार की लडकी होने के

माने रूपा को किसी काम काज में तो मतलब ही नहीं था। वह तो केवल खा लेना और आराम करना ही जानती थी।

रूपा और राकेश का विवाह उही धूमधाम से हुआ। मंगला और अनेक का राकेश एकलौता बेटा था इसलिए उन्होंने मादी के अक्षर पर ही क्या बी सोने के आभूषणों ने लाव दिया। रूपा और राकेश दोनों भोग चिन्ता में ही मस्त रहते। उन्हें यह भी पता नहीं रहता था कि घर में क्या हो रहा है। वेनारे बनेज मुवह में गाम तक अपने व्यापार में व्यस्त रहते। नौकर भाकरों पर ही उनका भी चारा काम चलता। राकेश को तो किसी काम से कोई मतलब ही नहीं था। वह तो केवल खर्च करना ही जानता था। वह आई स्कूल भी पढ़ा न था किन्तु उनकी पोशाक ही देख कर ऐसा लगता था जैसे कि कोई बड़ा मित्रित या काजिज का छात्र है। गडग मड़क का टाइट सूट, गले में मेक टाई, एक्टिंग जैसे कलान्मक बाल अंगे दुह में हा ममप सिगार लगा रहता था। रूपा का हाज तो और भी अधिक लया था। उसे तो मुवह में गाम तक बनव शृङ्गार करने-होटी पर रिपिस्टिक लगाने और दिन में कई बार पोशाक बदलकर अपना प्रदर्शन करने में ही अककाय तह्य मिनता था। रूपा और राकेश दोनों कैशन के मुकने बने हुए हर रात, रग और गाने बजाने की महफिल में दिवार्द पड़ने से। पनी परिवार के अंजे के नाते उनके पास नगर के सभी उत्तमों के निमन्त्रण पाते थे। फिर रूपा और राकेश दोनों ही ऐसी ससगर्भों की मुह मागा खन्दा बने थे। इसलिए ऐसी महफिलों में उनको और भी आणन्त्रिन किया जाता था।

रूपा और राकेश दोनों वषों डम प्रकार भोग और विलास में अपना जीवन व्यतीत करते रहे। घनेज और मंगला अब बुढ़े हो चुके थे। अनेक ही इस बात की लड़ी चिन्ता थी कि उनके पश्चात उनका क्याबार राकेश कैसे सम्भालेगा। इसी चिन्ता में अब मग वह कुड़ते रहते थे। उन्हें अब सोच

का रोग उत्पन्न हो गया। अकसर वह बेहोश हो जाने और घन्टो बेहोश रहते। मंगला बेचारी घनेश की इस बीमारी से चिन्तित रहती और कभी कभी घन्टो रोती रहती थी। मंगला ने बड़े बड़े डाक्टरों को बुलाकर घनेश का इलाज कराया किन्तु मर्ज बढ़ता गया ज्यो ज्यो दवा की।

आखिर लम्बी बीमारी के पश्चात घनेश का देहान्त हो गया। मंगला बेचारी नर पीटती और छाती कूटती ही रह गई। वह विधवा हो गई। उसके पास त्रितने आभूषण और अच्छे और सुन्दर वस्त्र थे वह उसने सब रूपा को दे दिये। रूपा और राकेश को घनेश की मृत्यु से जरा भी दुःख न हुआ बल्कि वह तो यह समझे कि उनकी आजादी में चार चाद लग गये। अब रूपा और राकेश की सैर तफरीह और फैशन और भी अधिक बढ़ गई जिसका परिणाम यह हुआ कि घनेश अपने पीछे जो कारबार छोड़ गया था। वह भी ठप हो गया। बेचारी मंगला जब कभी राकेश से कारवार सम्भालने को कहती तो राकेश और रूपा दोनों एक जुबान होकर उलटे मंगला पर ही बरस पड़ते थे। और उसे बुरी प्रकार से डाँटते थे। जो कुछ रूपा पैसा घनेश छोड़ गया था वह राकेश ने अपने अधिकार में कर लिया। बेचारी मंगला के पास तो फटे पुराने कपडो और मकान को छोड़कर कुछ भी न था। अब नौबत यहाँ तक पहुँच गई थी कि रूपा और राकेश मंगला को मकान से भी निकालना चाहते थे। किन्तु मंगला के सामने समस्या यह थी कि वह कहाँ जाय। उसका तो ससारा में राकेश और रूपा को छोड़कर कोई और नहीं था। वह बेचारी डाँट फटकार बरदाश्त करती किन्तु फिर भी उसी मकान के एक कोने में पड़ी अपनी तकदीर को दोष देती रहती थी। जब राकेश और रूपा ने यह देखा कि मंगला किसी प्रकार से भी मकान छोड़ने और उनसे अलग होने को तैयार नहीं है तो रूपा ने मंगला से यीछा छुड़ाने की एक तरकीब सोची। उसने राकेश से यह परामर्श दिया कि वह दोनों इस मकान को किसी के हाथ देच दें और स्वयं रूपा के बाप के यहाँ दोनों जाकर रहे। इस प्रकार मकान को

बेचकर उन्हें जो रुपया मिलेगा उससे वह जीवन भर गुलछर्रे उड़ाते रहेगे और उनका मंगला ने पीछा भी दूट जायगा। उन्हें इस बात की चिन्ता भी नहीं थी कि बेचारी मंगला बुढ़ापे में कहाँ जायगी।

राकेश और रूपा दोनों ने मंगला को कान्ती कान खबर न होने दी और मकान को चालीस हजार रुपये में बेच दिया। मकान बेचने के दूसरे ही दिन राकेश और रूपा दोनों अपना नारा सामान एक ट्रक में भरवा कर रूपा के माँ बाप के घर चलने लगे। उस समय मंगला मन्दिर में पूजा करने गई थी। जब वह मन्दिर से लौटी तो उसने देखा कि घर का सारा सामान केवल उसके कपडों और मन्दूक को छोड़कर ट्रक में लदाखड़ा है और रूपा और राकेश जाने की तैयारी में है। मंगला को यह देखकर बड़ा दुःख हुआ। उसकी आँखों से आसुओं की धारा वह निकली। उसने रोती आवाज में राकेश की ओर देखा कर कहा।

“वेटा राकेश ! यह क्या कर रहे हो, कहाँ जा रहे हो। मुझे किस पर छोड़े जाते हो”

अभी राकेश कुछ कहने ही वाला था कि रूपा ने बीच में ही बड़ी अकड़ के साथ उत्तर दिया।

“माँ जी ! हम दोनों जहाँ भी रह सकेंगे जा रहे हैं आप जहाँ चाहे जायें या रहे। हमने कोई आपके जीवन का ठेका नहीं लिया है”

“लेकिन मेरा तुम दोनों के सिवा इस संसार में और कौन है” मंगला ने सिसकते हुये कहा।

“माँ जी ! संसार में कोई किसी का नहीं होता। इस दुनियाँ में तो यों ही आना जाना लगा रहता है” रूपा ने मुंह बिगाड़ते हुये उत्तर दिया। और राकेश को सकेत देने हुये कहा।



“चलिये ना, वर ही रही है। आप इनकी बातें कब तक सुनते रहेंगे।”

यह कहकर रुना और राकेश रामान के साथ चले गये। मंगला बेचारी रोती पोटती अकेली घर पर रह गई। अब उसके सामने समस्या यह थी कि वह अपने जीवन निर्वाह के लिये क्या साधन ढूँढे जो सोने चाँदी के आभूषण उसके पास थे वह सब उसने अपने पति धनेश की मृत्यु के पश्चात् रूपा को दे दिये थे। वेबल गन दो चीजे उसके कानों में जो वह पहिने डूँढे थी रह गई थी। उसे यह भी पता नहीं था कि राकेश ने उसका मकान भी बेच दिया है। वह दिन भर यो ही रोती चिल्लाती रही और अपनी किरमत्त को बोनती रही। सायंकाल को जब उसे अधिक भूख लगी तो पड़ोस के मकान में चली गई। मंगला श्री कलरा कहानी सुनकर मंगला की पड़ोसिन और उसके पति को मंगला पर रहम आया और उन्होंने तुम्हें मंगला को खाने के निमंत्रण कुद्र उनके घर लें या लाकर खिला दिया। काफी देर तक मंगला अपनी पड़ोसिन से अपनी दुःख दर्द की बातें ना सुना सुनाकर रोती और बिसम्पनी रही। उसकी पड़ोसिन ने मंगला को डाँटते हुये यह परामर्श दिया कि वह अपने मकान को बेचकर उस रुपये में अपना जीवन निर्वाह करें। और कोई छोटा माटा मकान किराये पर ले ले। उसने मंगला से यह भी कहा कि जब तक उसे कोई मकान नहीं मिलेगा वह एक छोटा कमरा उने रहने को दे देगी। मंगला ने अपनी पड़ोसिन का इस महाबुद्धि के लिये आभार प्रकट किया और उसने चलते समय अपनी पड़ोसिन को बताया कि एक दो दिन में उनके पास आकर मकान को देवने आदि के लिये उसके पति को महायत्ता प्राप्त करेगी। पड़ोसिन ने अपने पति को और से उसकी पूरी महायत्ता करने का आश्वासन दिया।

मंगला चिराग जलने के साथ ही पड़ोसिन के मकान से अपने मकान पर पहुँची। जब वह अपने मकान पर पहुँची तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही उसने देखा कि एक घटीमानी व्यक्ति एक मोटर पर बैठे हुये अपने नौकरों

से उस मकान की पंक्ति से नाप हूत कर रहे हैं। मंगला ने अपने मकान का ताला खोलने हुये सातृजार के नौकरों की ओर मुड़कर कहा :

‘आप लोग कौन हैं ? इस मकान की इधों नाप कर रहे हैं?’

‘हम सेठ जी के नौकर हैं। आप उन्हीं से बात कीजिये। हम लोग तो उन्हीं के हुकुम से मकान की पैमाइश कर रहे हैं।’

मंगला नौकरों के इन सबदों को सुनकर तुरन्त हाथ में ताला चार्पा लिये सेठ जी की मॉटर की ओर बढी और उसने मोटर के पास पहुँचकर सेठ जी का ध्यान भरती और आकर्षित करते हुये कहा :

‘सुनिये ! आप कौन हैं ? आपके यह नौकर मेरे मकान की क्यों नाप कर रहे हैं?’

‘यह मकान मैंने बल चालीस हजार रुपये में खरीद लिया है।’

‘चालीस हजार में ?’ कितने आपने खरीद लिया। यह मकान तो मेरे पति के नाम में है। मैं इसकी मालिक हूँ।’ मंगला ने धबराकर उत्तर दिया।

‘आप मालिक हैं ? आप कौन हैं ?’

‘मैं राकेण की माँ हूँ।’

‘ओह ! अब मैं नम्रभा, देखिन यह मकान तो मैंने राकेण से ही बल नकद चालीस हजार रुपये में खरीदा है।’

‘भगर राकेण को इस मकान को बेचने का कोई अधिकार नहीं। यह मकान तो मेरे पति के नाम है। इसकी मालिक मैं हूँ।’

‘यह आप कैसे कह सकती हैं। हिन्दुओं में तो बाप की सम्पत्ति का मालिक उसका बेटा होता है।’

‘बिलकुल गलत ! आप इस मकान में पैर नहीं रख सकते। भगर आपने इस मकान को मोल लेने का इरादा किया तो मैं अदालत से आप के खिलाफ चारा जोई करूँगी।’

“राकेश की माँ ! जब तो यह मकान हमने खरीद ही लिया है और चालीस हजार नकद दिये हैं। जहाँ चालीस हजार खर्च किये वहाँ दस हजार मुकदमा लड़ने में भी खर्च कर देंगे, यही समझेंगे कि मकान चालीस में नहीं बल्कि पचास हजार में खरीदा है”

मंगला और मेठ जी में यह बातें हो ही रही थी कि जब तक नौकरों न मोटर के पास आकर मेठ जी को बताया कि उन्होंने पैमाइश पूरी करली अतः मेठ जी नौकरों के साथ मोटर पर बैठकर वहाँ से अपने घर चले गये। बेचारी मंगला जिसकी एक परेशानी दर नहीं हुई थी दूसरी परेशानी का पक्का उसके सर पर आ दूटा। वह घबराई हुई हालत में उल्टे पाव कि अपनी पड़ोसिन के यहाँ लौट गई और उसने सारा हाल उसे सुनाया। पड़ोसिन ने तुरन्त अपने पति को बुलाकर मंगला के मकान के सम्बन्ध में सारी बातें बनावीं। पड़ोसिन के पति एक सज्जन व्यक्ति थे उन्होंने मंगला को धैर्य बधाते हुए आश्वासन दिया कि वह दूसरे दिन किमी बकील को बुलाकर उसके मकान का बँनामा रद्द कराने के लिये अदालती कार्यवाही करावेंगे। मंगला बेचारी उसी परेशानी की दशा में अपने घर चली गई और दूसरे दिन सुबह होते ही वह फिर अपने पड़ोसी के घर पहुँची। पड़ोसी ने अपने किसी एक मित्र बकील को बुलाया और मंगला का मकान जिस प्रकार राकेश ने सेठ को बेचा था उसे रद्द कराने के लिए अदालत में चारा जोड़ भरने को कहा। बकील साहब ने आते ही मंगला से मकान के सम्बन्ध में सारी बातों को सुना और इन बात का आश्वासन दिलाया कि कानून के अनुसार उस मकान में मंगला का ही अधिकार है। उन्होंने मंगला का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करके कहा।

“इस मकान को बेचने का हक राकेश को बिल्कुल नहीं था किन्तु उसके द्वारा बेचा गया मकान अदालत ने अवश्य रद्द हो जायगा।”

“बकील साहब ! मैं आपकी इस कृपा के लिये सदैव आभारी रहूँगी।”

“लेकिन एक बात को मुनिये चालीस हजार की कीमत पर चार हजार

रुपया तो कोटि फीस लगाने को ही चार्जिन्स ग्रीग फिर मेरी फीस तथा अन्य ग्रीग खर्चें गिनाकर लगभग पाँच हजार रुपये खर्च होंगे”

“वकील माहव ! पाँच हजार रुपये मैं कहीं से लाऊंगी मेरे पास तो पाँच सौ रुपये भी नहीं है । केवल कानो मे माँ दो सौ के मोने के बुन्दे और हाथो मे मेरे पति की दी हुई एक अघूठी के गिवा ग्रीग कुछ भी नहीं है।”

‘तो फिर यह मुकदमा कैसे दायर हो सकता है । मैं अपनी फीस में कुछ रियायत भी कर सकता हूँ किन्तु कोटि फीस तथा मुकदमे का खर्च तो हर हालत में देना होगा”

“बर्शल साहब ! मेरे पास चार हजार रुपया कहीं जो मैं कोटि फीस जमा करूँ । यह कैसा प्रश्न है कि गरीबो को रुपये के बिना अदालत से इन्साफ भी नहीं मिल सकता” आज के युग में इन्साफ भी कितना कीमती है”

“हाँ वह ठीक है । जब तक आपके पास वकील को देने की फीस नहीं है और कोटि फीस लगाने को पैसा नहीं है आपको अदालत में इन्साफ कैसे मिल सकता है”

‘तो इसका मतलब यह है कि मैं अपने मकान से हाथ धो बैठूँ और भिखारिन बन जाऊँ”

“इसके सम्बन्ध में मैं क्या कह सकता हूँ । मैं तो आपकी सिर्फ इतनी ही सहायता कर सकता हूँ कि फीस में आपकी रियायत करदूँ”

वकील माहव के इन शब्दों को सुनकर मंगला खून का सा घूंट पी कर गई। उसके मुह में एक दम “हाय” निकली और वह बिना कुछ कहे दूने हो वहाँ से उठकर चली गई। फिर उसके बाद से अब तक नगर में मंगला को किसी ने नहीं देखा । न जाने वह कहाँ चली गई । जीवित भी है या मर गई । उसका किसी को कुछ पता नहीं । नगर में जितने

मुँह उतनी ही बातें मगला के सम्बन्ध में सुनने को मिलती हैं। राकेश और रूपा ने भी चालीस हजार रुपया कुछ ही वर्षों में भोग बिलास में उठा दिया। अब रूपा के माँ बाप का भी देहान्त हो चुका है। रूपा ने भाइयों ने रूपा और राकेश को अपने घर से निकाल दिया। वह दोनों भी फटे पुराने कपड़ों में श्रवसर नगर की गलियों में घूमते दिखाई देते हैं। जवानी में ही दोनों बूढ़े मालूम पड़ते हैं। पता नहीं वह अपनी गुजर दसर कहाँ से और किस प्रकार करते हैं।

---

# थाली के बैंगन

जिस प्रकार वर्षा काल में हजारों नये जीव जन्तुओं का उदय हो जाता है वैसे वर्षा काल में बहुत एक मय मरने से जाते हैं यही दशा भारत में प्रायः वृत्तियों के समझ लेनी है। न उन किन्तु अलक्ष्य गतिवों नये नये नये लक्षणों से जाने दिखल पत्नी है। नानेन्द्र भी ऐसी ही गतिवों के आधिष्ठाक करने में अपने नगर में बड़ा निपुण अभ्यास जाता था। वह न केवल विभिन्न गतिवों का अध्ययन रह चुका था वरन् उसे कई गतिवों की बुद्धिपूर्वक जांचने का भी नापक प्राप्त था वह न जाने किन्तु समय में मन्त्री और मन्त्री मन्त्री करने का शक्ति देव रहा था, किन्तु उसकी मनोकामना कभी भी पूरी न हो सकी। कभी वह अपने भाग्य को कोसता, कभी अपने कर्मों की उदासीनता पर शोकवश, कभी जन्म-दोषों को बुरा बुरा सुत्र से जानना वह उसी उधेड़ चुन में लगा रहता था। उसी की व्यासा उसे प्रकामन साधना की और घर का काम धन्धा देखने को कहती किन्तु नानेन्द्र बजाय इसके कि अपनी स्त्री के समझने पर विचार करना, उसका उसी बेचारी पर ध्यान देता। व्यासा अपना सा नुह देकर मृत हो जाती और दिन ही दिन में कुड़ने लगती थी

नानेन्द्र का परिवार कोई बहुत बड़ा न था उसकी स्त्री व्यासा, उस के दो बच्चे, एक लड़की गोपी और एक लड़का नन्दन। इन्हीं चार व्यक्तियों का उसका परिवार था। नानेन्द्र के पिता की मृत्यु हो गये थे। एक में नानेन्द्र अपने स्त्री बच्चे के साथ रहता था नानेन्द्र तीन सौ रुपये मासिक किराये पर रहता हुआ था उसी तीन सौ रुपये में नानेन्द्र के पूरे परिवार का निवाह होता था। नानेन्द्र को स्त्री व्यासा बड़ी चपूर स्त्री थी। वह भी अपने नानेन्द्र को प्रकामन पाता उसके चेहरे में दे देनी और शेष २०० रूपों में अपने घर का काम काज चलाती। नानेन्द्र का

तड़का तरुण और लड़की गोपी दोनों हाइ स्कूल पास करके कालिज में प्रवेश कर चुके थे। उन दोनों का खर्चा भी सौ रुपये मासिक से कम न था, किन्तु श्यामा ने किसी न किसी प्रकार कालिज के मैनेजर से मिलकर दोनों की फीम आधी मात्र करवा रखी थी। गोपी, तरुण से लगभग दो या तीन वर्ष बड़ी थी और अब उमरी आयु ननरह यठारह वर्ष की हो चुकी थी। श्यामा को गोपी के विवाह की चिन्ता दिन रात टेचैन रती थी। अब गोपी बी० ए० में पहुँच चुकी थी इमीलिये एम० ए० पास नहीं तो बी० ए० पास लडका से उसका विवाह जरूर होना चाहिये। इन्ही विचारों में श्यामा कभी कभी रात को देर तक चारपाई पर इधर से उधर क्रकटे बदलती रहती थी। कुछ ही दिनों बाद परीक्षा आरम्भ हुई और गोपी ने बी० ए० फाइनल और तरुण ने बी० ए० प्रीवियस की परीक्षाये दी। गोपी और तरुण दोनों अपनी अपनी परीक्षाओं में पास हो गये। उनका परीक्षा फल जिस समाचार पत्र में निकला उसे लेकर दोनों खुशी खुशी अपने घर आये और दोनों ने अपनी माँ श्यामा के पैर छूकर समाचार पत्र में अपना रोल नम्बर दिखाते हुये अपनी माँ को अपने पास होने का शुभ सन्देश दिया। श्यामा ने प्रमन्न होकर दोनों की पीठ ठोकी। अभी श्यामा गोपी और तरुण को शावासी देही रही थ नागेन्द्र भी बाहर से आगया। इससे पहिले कि नागेन्द्र कुछ कहता श्यामा ने अखबार को नागेन्द्र को दिखाते हुये स्वयं ही मुस्कराकर कहा।

देखिये, गोपी और तरुण दोनों पास होगये ”

“श्यामा ! मैंने पहिले ही अखबार देख लिया” नागेन्द्र ने हसकर उत्तर दिया।

“तो आज इस खुशी में सत्य नारायण की कथा क् । दीजिये”

“जरूर कहलाओ ! श्यामा इस अखबार में एक और खुश खबरी भी छपी है”

“वह क्या” श्यामा ने उत्सक होकर पूछा।

“वह यह कि अगले आम चुनाव की तिथियों की घोषणा भी कर दी गई है”

“हमें आम चुनाव में क्या लेना है” श्यामा ने मुह विगाड़ कर कहा ।

“श्यामा ! इन बार मैं अवश्य चुनाव में जीतूँगा, मैंने ऐसी योजना बनाई है”

“रहने भी दीजिये । पहिले भी तो आप ऐसा ही कहा करने थे किन्तु कुछ नहीं हुआ, अपना पैसा भी बरबाद किया । और हार का मुंह भी देखना पडा ”

“लेकिन श्यामा ! पहिले मैं जिन पार्टियों से खड़ा होता था उनमें मैं अब मैं किसी पार्टी से खडा नहीं होऊँगा । अब स्वयं मैंने एक नई पार्टी बनाई है । आज से ही उसके मेम्बर बनाना आरम्भ कर रहा हूँ”

‘मेरी सम्झ में नहीं आता कि आप कितनी पार्टियों को छोड़ चुके हैं । जब पुरानी पार्टियों में रहकर ही आपको सफलता न मिली तो नई में क्या मिलेगी’

“श्यामा ! तुम सम्झती नहीं हो, नई - - - बनाकर नये प्रोग्राम, नये नारे, नये ढंग से छपवाये जायेंगे, जो आज तक किसी पार्टी के पास नहीं है”

“लेकिन आपको मालूम है कि गोपी अब नवान हो गई उसके दिवाह की मुझे दिन रात चिन्ता लगी रहती है । कुल तीन सौ रुपये खर्चे के आते हैं, जिसमें सारे घर का खर्चा, बच्चा की पढाई, आसि- गोपी के विवाह में भी तो दो चार हजार रुपये खर्च होवे उनका प्र - भा करना है।”

“श्यामा ! तुम गोपी के दिवाह की जरा भी चिन्ता न करो । आजकल कालिज में पढने वाली लडकियाँ अपना पति स्वयं ढूँड लेती हैं । माँ बाप को उनके विवाह या विवाह के खर्चे की जरूरत नहीं पडती”



'यह आप क्या कह रहे हैं, गोपी ऐसी लड़की नहीं है'  
'अच्छा ! इन बातों को छोड़ो, अब जरा मेरी एक बात सुनो'  
'कहिये'

'पहिले इन बच्चों को वापस भेज दो'

गोपी और तारुण सकेत पाते ही बाहर चले गये ।

'बनाइये आप क्या कहना चाहते हैं' जयामा ने नरसिंह को श्रोण देखकर पूछा

'श्यामा ! मैंने इस बार चुनाव में खड़े होने और जीतने का पक्का इरादा कर लिया है'

'तो मैं क्या करूँ'

'मेरा चुनाव और मेरी जीत तुम्हारे हाथ में है'

'मैं आपका मतलब नहीं समझती'

'मेरा मतलब यह है कि मेरे पास चुनाव में खड़े होने का पैसा नहीं । मैं यह चाहता हूँ कि तुम अपने गहने मुझे देदो ताकि मैं उन्हें गिरवी रख कर चुनाव लड़ सकूँ'

'यह आप क्या कह रहे हैं, चार पाँच हजार रुपये के मेरे गहने हैं जो आपके पिता ने बनवा दिये थे । आपने तो अभी एक छल्ला भी नहीं बनवाया । मैं उन्हें पक्कर गोपी का विवाह करूँगी'

'ज्याय ! तुम क्या परताम करती हो, इस बार नाव में जीतने के शक भीतर नहीं आता, फिर तुम जितने चाहो गहने बनवाना, बल्कि हीने और जयहर, न पगीरना'

'तहीं मैं यह गहने आपको गिरवी रखने को नहीं दूँगी' श्यामा ने आँखों में आँसू भर कर कहा ।

“श्यामा ! तुम अपने पति का सन्धी पत्र पर गुञ्जित होना पसन्द नहीं करती, तुम्हें मालूम है कि पुराने पत्राने की धिन्धियाँ अपने पति पर सर्वस्व निष्ठावर कर देती थी और उनके साथ सती हो जाती थी। मार हाथ रे कलजुग कि आजकल की स्त्री अपने पति की भलाई के लिये अपने आभूषण भी नहीं दे सकती” नागेन्द्र ने अपना माथा टोके हुए कहा।

“आप ऐसा न कहिये। आप सब सब गहत ले जायें। मेरे सब कपड़े ले जाइये, जो आपको सर्जो हों कीजिये” श्यामा ने निमकते हुये उत्तर दिया।

“श्यामा ! मुझे तुम ने एसी ही आशा थी, भगवान ने चाहा ना नन्ही होने ही तुम्हें गहतो ने लाल दूपा और गोपी का दिवह एसी धूम से करु गा कि उस नगर मे किमी का न हुआ हो”

श्यामा ने भट्ट अन्दर काटरी ने जाकर अपना सन्दक खोल और अपने समस्त सोने चाँदी के आभूषण लाकर नागेन्द्र के नामने रख दिया। नागेन्द्र को आभूषण मिलने की देर थी। वह आभूषणों को लेकर सीधा साहूकार की दुकान पर गया और तबद बाग हजान रुपये में आभूषण गिरवी रखकर सीधा अपने इष्ट मित्रों के पास आया। उसने अपने इन्ही मित्रों और साथियों की सम्मन्वित करके एक नई राजनैतिक पार्टी का जन्म दिया था। नागेन्द्र ने अपने मित्रों के सङ्योग के आश्वस्त पर अपने आप को चुनाव मे खड़े होने का ऐलान कर दिया। उसने अपने माधियों की सहायता से नगर मे एक चमरा किराये पर लेकर उसे अपना चुनाव कार्यालय एवं नई स्थापित पार्टी का कार्यालय बनाया और पार्टी का साईन बोर्ड भी लगा दिया।

उधर श्यामा दिन भर उदान बँठी ग्ही। उसकी आँखों से बराबर आँसू निकल रहे थे। जब वह गोपी और तच्छा को आना देखती तो भट्ट आसूओं को पोछ कर हसने और मुस्कराने की कोशिश करती। उसने इन

आभूषणों को गोपी के विवाह के लिये सुरक्षित रक्खा था, वह कभी स्वप्न में भी नहीं सोच सकती थी कि उसे इन गहनो से नागेन्द्र की राजनैतिक हलचलो के कारण हाथ धोना पड़ेगा ! उसने ज्यों त्यों करके अपने दिल की समझाने की कोशिश की ! वह रोज सुबह मुहल्ले में स्थित भगवान के मन्दिर में जाती और भगवान से नागेन्द्र को चुनाव में विजय प्रदान करने की प्रार्थना करती थी । चुनाव में नागेन्द्र भी इतना व्यस्त रहने लगा कि दिन २ भर उसकी शकल देखने को नहीं मिलती थी । कभी २ तो वह रात्रि में भी नहीं आता और अपने कनवेसिंग एवं अपने साथियों के साथ चुनाव सम्बन्धी योजनाओं में ही लगा रहता । श्यामा भी सारे दिन नगर में घरों के भीतर जाजा कर घर की स्त्रियों से नागेन्द्र के लिये वोट देने की प्रार्थना करती । इस कनवेसिंग में अकसर श्यामा को नागेन्द्र के सम्बन्ध में बहुत कुछ बुरा भला भी सुनना पड़ता था । कुछ स्त्रियाँ नागेन्द्र को थाली का बैगन कहती, कुछ उसे वे उसला और म्वार्थी कहती, किन्तु श्यामा किसी न किसी प्रकार उन्हे समझाने की कोशिश करती । नागेन्द्र के मुकाबले में श्यामा के कनवेसिंग का प्रभाव अच्छा पड़ता था । मुहल्ले और पास पड़ोस की स्त्रियाँ तो पहिले से ही श्यामा से सहानुभूति रखती थी और उसे एक नेक महिला समझती थी । इसीलिये श्यामा जब कनवेसिंग को जाती तो अकेली नहीं वरन् अपने साथ मुहल्ले की चार छै स्त्रियों को भी ले लेती थी । नागेन्द्र को भी यह पता था कि श्यामा उसके कनवेसिंग में काफी दौड़ धूप कर रही है । वह जब कभी घर आता तो श्यामा के इस प्रयत्न की भूरि भूरि प्रशंसा करता था । लेकिन श्यामा सदैव यह कहकर उसकी जबान बन्द कर देती थी ।

‘‘चुनाव आपका अकेला का नहीं बल्कि हम दोनों का है । स्त्री को वैसे पुष्प की अर्धांगिनी कहा गया है, इसलिये चुनाव की सफलता तो दोनों की होगी’’

नागेन्द्र श्यामा के शब्दों को सुनकर हस कर चला जाता था ।

आखिर चुनाव का दिन आया। कई पार्टियों के चुनाव स्थल पर डेरे और शामियाने लगे। नागेन्द्र ने भी अपनी नई पार्टी का एक छोटा सा शामियाना लगाया। श्यामा, गोपी और तरुण प्रातःकाल से ही इस शामियाने में आकर वोटर लिस्ट के अनुसार पंचियां आदि बनाने में लग गये थे। पोलिंग आरम्भ होने से पहले ही सैकड़ों स्त्रियाँ श्यामा के शामियाने में बोट डालने आ गईं। उनमें से कुछ ने वोटरों को समझाने और पंचियां आदि देने में श्यामा का हाथ बटाना आरम्भ कर दिया। अन्य पार्टियों के उम्मीदवारों को आश्चर्य था कि नागेन्द्र के शामियाने में इतनी अधिक संख्या में स्त्रियाँ क्यों एकत्रित हो रही हैं। पोलिंग आरम्भ हुआ। सैकड़ों स्त्रियों ने लाइन लगाकर पोलिंग बूथ पर नागेन्द्र का वोट डाला। कभी २ तो ऐसा भी देखा गया कि गुरुव किमी दूरसे उम्मीदवार को कोट देते थे किन्तु उनकी स्त्रियाँ अपने पुरुषों की बात न मानकर श्यामा से पर्चा लेकर नागेन्द्र को वोट देजाती थी। नगर की अधिकाँश स्त्रियों ने श्यामा के आवाहन पर नागेन्द्र को वोट दिये। परिणाम यह हुआ कि नागेन्द्र भारी बहुमत से विजयी घोषित हुआ। चुनाव स्थल से घर तक नागेन्द्र के सहयोगी उसका जय-जयकार करने हुये उसे घर तक लाये। नागेन्द्र को लोगों ने इतने फूल हार पहिनाये कि वह मालाओं से लदा हुआ था। श्यामा, गोपी और तरुण सभी खुशी से फूल नहीं मगाने थे। नागेन्द्र ने श्यामा का वन्द्यवाद देते हुये उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा।

“श्यामा ! वास्तव में यह विजय तुम्हारी बदौलत ही हुई है। तुमने मेरे प्रति न केवल अपना कर्तव्य पूरा किया बरन् सदैव के लिये मुझे अपना आभारी बना लिया”

“गिमा कहकर आप मुझे शर्मिन्दा न कीजिये”

अभी नागेन्द्र कुछ कहने ही वाला था कि गोपी ने बीच में बोलते हुये कहा।

“मम्मी ! यह तो पापा ठीक कर रहे है कि पापा की जीत आप